www.thearyasamaj.org

Annual Subscription Rs. 100/-

ओ३म्

27th Oct 2013

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

SWAMI DAYANAND SARASWATI
THE MAKER OF MODERN INDIA

Swami Dayanand Saraswati is certainly one of the most powerful personalities who have shaped modern India and are responsible for its moral regeneration and religious revival. The most prominent Arya Samajists are at the same time the most influential nationalist leaders....

-Netaji Subhash Chandra Bose

www.thearyasamaj.org

'वैदिक धर्म, मत-मतान्तर एवं आर्य समाज'

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

सुदूर अतीत में इस सृष्टि की रचना के बाद जब पहली बार मनुष्य का जन्म हुआ तो आंख को खोलने के साथ उसने सोचा होगा कि वह कहां है, कौन है, यह संसार क्या है और उसका उद्देश्य क्या है, आदि? आरम्भिक मनुष्य इस सृष्टि में अकेला नहीं था। उसके साथ व आस-पास अनेक मनुष्य उत्पन्न हुए थे जो सभी युवा थे और उनमें स्त्री व पुरूष दोनों थे। इसके जन्म लेने से पूर्व ही सृष्टि में वनस्पतियां लहलहा रही थी। जल से भरे नदी व नाले आसपास बह रहे थे। अहिंसक पशु उसके इर्द-गिर्द घूम रहे थे। पक्षी उड़ रहे थे एवं चहचहा रहे थे। सारा वातावरण उसको विस्मित व अचम्भित कर रहा था। इस प्रकार का चिन्तन मनुष्य में तभी होना सम्भव है जब कि उसको किसी एक भाषा का ज्ञान हो। यहां केवल एक ही सम्भावना है कि उसको भाषा संसार के स्रष्टा व रचयिता "ईश्वर" से ही प्राप्त हो सकती थी व हुई थी। यह नया मानव यह नहीं जानता था कि जो प्रकाश सूर्य से उसे प्राप्त हो रहा है, उस सूर्य, प्रकाश आदि के नाम क्या हैं, नदी व जल के स्रोत जो उसके आसपास विद्यमान थे, उनके नाम व संज्ञाओं से भी वह सर्वथा अपरिचित व अनभिज्ञ था। उसे स्वयं के नाम व अंगों का भी किंचित अता-पता नहीं था। भूख व प्यास से भी वह सर्वथा अपरिचित था। उसे इन सबके व अपने कर्तव्य के बारे में कि जीवनयापन कैसे, किस उद्देश्य से व क्यों करना है, ज्ञात नहीं था। किस काम को करना चाहिये और किन कामों को नहीं इसका भी उसे किंचित ज्ञान नहीं था। इसकी उसे तत्काल आवश्यकता थी जिससे उसका जीवनयापन सार्थक, उद्देश्यपूर्ण व लक्ष्य की प्राप्ति के अनुकूल हो। सभी मनुष्य पूर्णतः अज्ञानी थे। कोई आपस में ज्ञान का आदान-प्रदान नहीं कर सकते थे। भाषा का ज्ञान न होने तक परस्पर बातचीत कर अपने सुख-दुख भी एक दूसरे को बता नहीं सकते थे। ऐसी विषम परिस्थिति कुछ थोड़े समय के लिए उनके सामने उपस्थित हुई। दूसरी ओर ईश्वर सर्वज्ञ होने के कारण उसकी हर परेशानी व कष्ट व दुःख से परिचित था। वह उसकी हर परेशानी व कष्ट को दूर करने में सक्षम व समर्थ था। उसने फिर देर क्यों लगानी थी? अपने नित्य ज्ञान, ऋग-यजु-साम-अथर्व वेद को वह आरम्भ में ही चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा के माध्यम से भाषा व मन्त्रार्थ सहित प्रदान करता है जिससे उसके सच्चिदानन्द, सृष्टिकर्ता, सर्वज्ञ व कर्म-फल व मुक्ति आदि के देने वाले स्वरूप का बोध होता है। ईश्वर से प्राप्त सब सत्य विद्याओं के ज्ञान वेद को यह चारों ऋषि अन्य ऋषि 'ब्रह्मा' को प्रदान कर स्वयं भी अन्य वेदों का ज्ञान अर्जित कर पश्चात शेष सभी मनुष्यों को कराते हैं जिससे सृष्टि के आरम्भ से ही सभी मनुष्यों को कर्तव्य के बोध के साथ सृष्टि के निमार्ण एवं जीवन के उद्देश्य आदि से जुड़ी शंकाओं का निवारण हो जाता है। उन्हें यह ज्ञात हो जाता है कि भोजन के रूप में कन्द मूल व फलों एवं गोदुग्ध व जल आदि का पान कर जीवन निर्वाह करना है। सृष्टि के आरम्भ में आदि मानवों के सामने भोजन की कोई समस्या नहीं थी। पर्याप्त कन्द मूल एवं फल व दुग्ध प्रचुरता से उपलब्ध था। वेदों के ज्ञान व अपने विवेक से उन्होंने दुग्ध से घृत, नवनीत-मक्खन, छाछ, दही आदि बनाये व कृषि कर गेहूं, चावल, हरि सब्जियां उत्पन्न कर यथा आवश्यकता उनका सेवन आरम्भ कर दिया था। अतः पुस्तकों में जो पढ़ाया जाता है कि आदि मानव सृष्टि के आरम्भ काल में पत्थरों आदि को हथियारों के रूप में प्रयोग करके पशुओं का शिकार कर तथा उन्हें अग्नि में तपा कर अपनी क्षुधा व भूख दूर करता था, यह हमारे विदेशी बन्धुओं का अपनी प्रवृत्तियों के अनुरूप अविवेक व छलयुक्त मान्यता व निर्णय है। यह प्रायः ऐसा ही है जैसे कि अज्ञानी मनुष्य ज्ञानी मनुष्य को अपनी ही तरह अज्ञानी व मूर्ख समझ लेता है। यह एक सौ प्रतिशत सत्य है कि आदि मानव पूर्णतः शाकाहारी व निरामिष भोजी था।

मन मोहन कुमार आर्य

ऋषियों को वेदों का ज्ञान मिलने व उनके द्वारा अन्य मनुष्यों को विद्यादान व शिक्षण के द्वारा ज्ञान प्रदान किए जाने से सभी समस्याओं के हल मिल गये और जीवनयापन से सम्बन्धित कोई मुख्य समस्या नही रही। इसे समझने के लिए इतना ही जानना आवश्यक है कि सभी व अधिकांश समस्यायें अज्ञान से उत्पन्न होती हैं और ज्ञान प्राप्त होने पर उनका निवारण हो जाता है। ऐसा ही वेदों का ज्ञान प्राप्त होने व ऋषियों द्वारा उनका प्राचार करने से हुआ। दिन-प्रतिदिन ज्ञान का प्रयोग कर नये-नये आविष्कार व कार्य

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जीवन

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

ఆర్య జీవన్

హింది-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश
हैदराबाद का मुख पत्र

वर्ष : २२ अंक : २०
दयानन्दाब्द : १९०
सृष्टि संवत् : १९७२९४९११३
वि.सं. : २०७०
नंदन नाम संवत् आश्विन कृष्ण पक्ष
२७-१०-२०१३

सम्पादक
विठ्ठलराव आर्य
वार्षिक मूल्य रू. 100

कार्यालय
आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश
महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद

दूरभाषः 040-24753827, 66758707, 24750363
फ्याक्सः 040-24557946, 24756983

Email :
aaryajeevan_aaryajivan@yahoo.co.in.
arpratinidhisabha@yahoo.co.in.
acharyavithal@gmail.com,
aryavithal@yahoo.co.in.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

Editor: Vithal Rao Arya
Annual subscription: **Rs.100/-**

प्रत्येक मनुष्य को पुरूषार्थ पर ध्यान देना चाहिए। इसी के द्वारा क्रियामाण, संचित और प्रारब्ध कर्म की स्थिति सुधरती है। इसी से मनुष्य उत्तम स्थिति को प्राप्त हो कर उन्नति के पात्र बनते है।

सत्य का प्रकाश : सत्यार्थ प्रकाश

सत्यर्थ प्रकाश ग्रन्थ मई १८७४ में मुरादाबाद्र 'उ.प्र' के राजा जयकृष्णदास के प्रस्ताव पर १२ जून १८७४ से लेकर सितम्बर १८७४ तक अर्थात कुल साढ़े तीन महीने में महर्षि दयानन्द द्वारा महाराष्ट्रीय ब्राह्मण लिपिक पं. चन्द्रशेख्र को बोल-बोल कर लिखाया ग्रन्थ है, जो फ़रवरी १८७५ में वाराणसी से प्रकाशित हुआ था। यह दुर्भाग्य कहिये कि महर्षि को लिपिक से लेकर जो भी सहयोगी मिलें, उनमें अनेक धोखेबाज निकले, इसलिये सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण लेखन में मिलावट के कारण महर्षि को निरस्त घोषित करना पड़ा। द्वितीय संस्करण के सम्पादक जाति से चारण मुन्शी समर्थदान ही ऐसे सहयोगी मिले, जिन्होने महर्षि के साथ कभी भी धोखा नहीं किया और महर्षि भी मुन्शी पर पूरा विश्वास करते थे। उदयपुर के नवलखा महल में अगम्त १८८२ में लिखा गया सत्यार्थ प्रकाश का द्वितीय संस्करण महर्षि दयानंद के जीवनकाल में मुन्शी समर्थदान द्वारा सम्पादित हो गया था। परन्तु वह छप कर प्रकाशित होता कि ३० अक्टूबर १८८३ को अजमेर में महर्षि का बलिदान हो गया। पश्चात् दिसम्बर १८८४ को यह ग्रन्थ प्रयाग में वैदिक यन्त्रालय में छपकर विक्रय के लिये जारी हुआ।

प्रारम्भ से लेकर आज तक के समस्त प्रकाशित ग्रन्थों में सत्यार्थप्रकाश शीर्षक से प्रकाशित यह पहला ग्रन्थ है। यह प्रश्न उठता रहा है कि क्या इसका शीर्षक "सत्य प्रकाश" नहीं रखा जा सकता था? नहीं क्योंकि सत्य का प्रकाश करने की सामर्थ केवल परमात्मा में है जो सृष्टि के आदि में वेद के रूप में करता है। मनुष्य तो केवल सत्य के अर्थो का प्रकाश करने की सामर्थ्य रखता है। वह सत्य क्या है? ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीन अनादि सत्ताएँ सत्य हैं और इनसे बनी यह सृष्टि और यह संसार सत्य है। सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में महर्षि दयानन्द ने इन्ही सत्य के अर्थो का प्रकाश अर्थात इस सृष्टि या संसार की व्याख्या सहित मानव और मानव जीवन के समस्त पहलुओं की व्याख्या की है तथा यह बताया है कि मानव इस संसार में कैसे रहे और कैसे उपभोग करे।

सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द सरस्वती की बेजोड़ कृति है। इस ग्रन्थ रत्न ने लाखों के जीवन को बदला है। समस्त सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ जाइये, उसमें एक पृष्ठ भी ऐसा न मिलेगा जिसमें सन्देहों की निवृत्ति न हो। अनेक धार्मिक उलझनों में पड़े व्यक्तियों ने सत्यार्थ प्रकाश से मार्ग तलाशा सत्य को हस्तामलकवत् दिखाने में सत्यार्थ प्रकाश अप्रतिम है। "तमसो मा ज्योतिर्गमय" के प्रार्थी इसे अवश्य पढ़े, मार्ग मिलेगा। तभी तो स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने कहा था इसी पवित्रतम ग्रन्थ के अध्ययन से मैं पवित्र बना। यह मेरे जीवन का ज्योति स्तम्भ है। पादरी सी.एफ.एण्ड्रयूज के शब्दों में "मैने भारत आकर सच्चे हिन्दू धर्म का परिचय सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय से पाया है। मैं समस्त सन्देह निवारक इस अमर ग्रन्थ को पढ़ने की सभी सत्यान्वेषियों को प्रेरणा देता हूँ। "सनातन धर्म के एक विद्वान ने बड़ी सुन्दर बात कही थी" कि हमारे अन्दर अविद्या के कारण, अन्धविश्वास, कुरीतियाँ, अवैदिक मान्यताएँ और जहालत रूपी कूड़ा-करकट इकट्ठा हो गया था जिसको महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश और उसके बाद आर्य समाज ने छलनी बन कर यह सब कूड़ा-करकट निकाल कर संसार के सामने हमे सही स्वरूप वैदिक धर्म का दर्शन कराया।"

महर्षि दयानन्द का कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश कुल २० परिच्छेदों में लिखा गया है। जिनमें मुख्य भूमिका - 1, समुल्लास - 14, अनुभूमिकाएँ - ४ और अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश -1, मुख्य भूमिका में सत्यार्थ प्रकाश लिखने का उद्देश्य और मुख्य परिच्छेद, अध्याय और महर्षि के सम्बोधन में समुल्हास सम + उल्लास अर्थात एक समान उल्लास, प्रसन्नता या किसी भी विषय की व्याख्या करने, खण्डन-मण्डन अथवा समीक्षा करने में एक जैसा प्रसन्न भाव रखा गया है, लेशमात्र भी कोई पक्षपात, कोई नाराजगी, अन्यथा भाव या पूर्वग्रह युक्त होकर नहीं लिखा गया है अपितु संसार के उपकारार्थ मानव-मानव मिलकर रहें के उद्देश्य से विषय क्रमानुसार तर्क और युक्ति पूर्ण ढंग से यह सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ लिखा गया है।

महर्षि इस ग्रन्थ की भूमिका में लिखते है "कि मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात जो सत्य है उस को सत्य और जो मिथ्या है उस को मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाये। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य प्रक्ष-पाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है इसलिये वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन को सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी कोई बात नहीं रखी है और न ही किसी का मन दुखाना व किसी की हानि पर तात्पर्य है किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।"

"सर्वथा सत्य का विजय और असत्य का पराजय और सत्य ही से विद्वानो का मार्ग विस्तृत होता है, इस दृढ़ निश्चय के आलम्बन से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी सत्यार्थ प्रकाश करने से नहीं हटते। गीता का यह वचन बड़ा दृढ़ निश्चय है कि जो-जो विद्या और धर्म प्राप्ति के कर्म है वे प्रथम करने में विष के तुल्य और पश्तात् अमृत के सदृश होते हैं ऐसी बातों को चित्त में धर के मैंने इस ग्रन्थ को रचा है।"

(शेष पृष्ठ २१ पर)

www.thearyasamaj.org

మహర్షి దయానంద సరస్వతి

(యుగవిధాత తత్త్వవేత్త)

Feb. 1824 — Nov. 1883

www.thearyasamaj.org

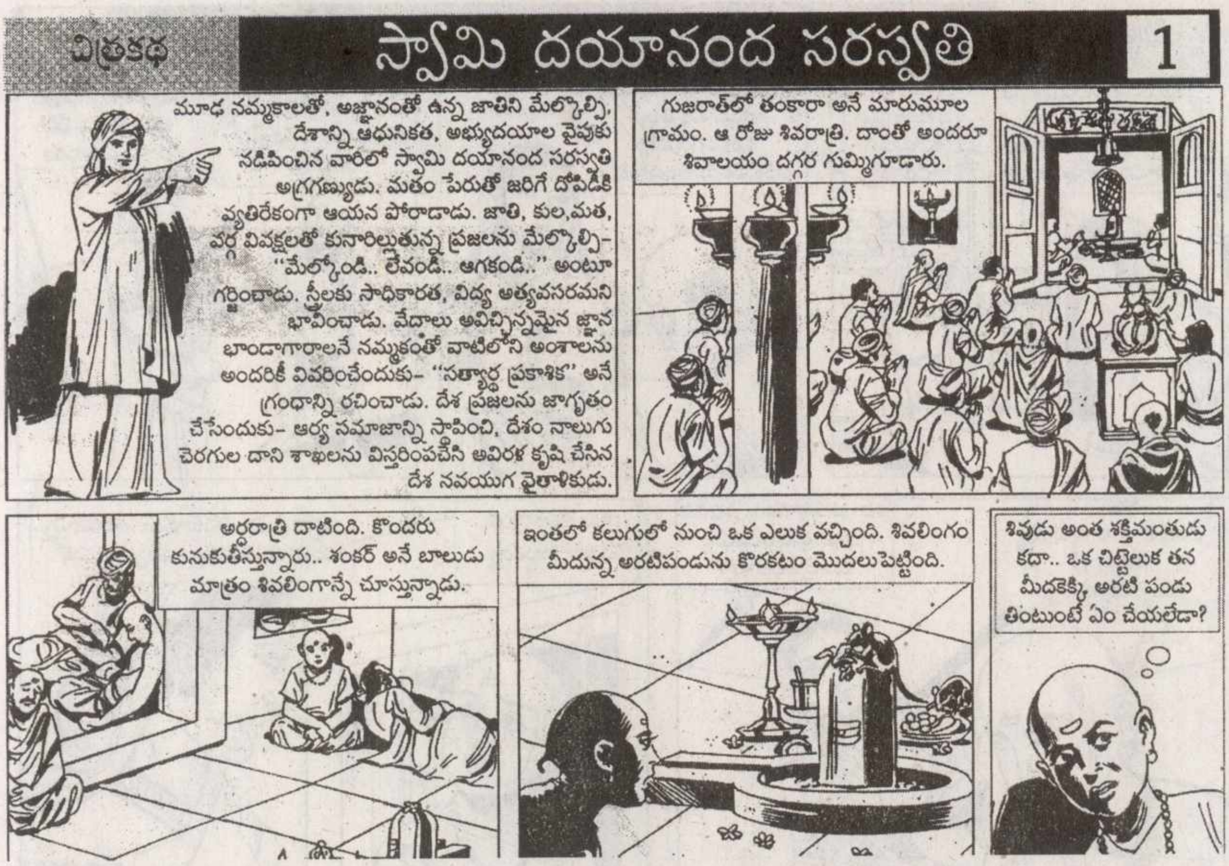

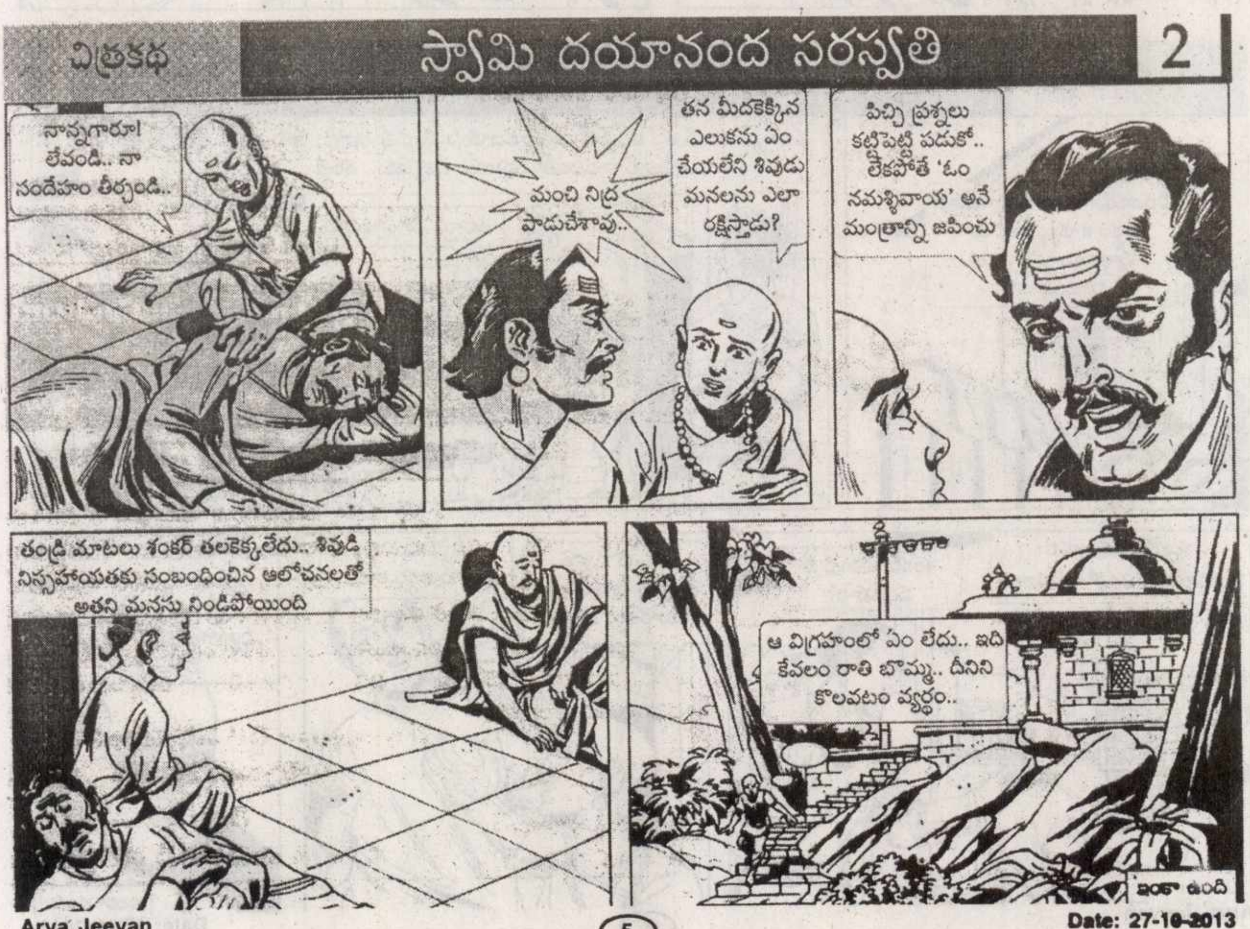

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి 3

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి 4

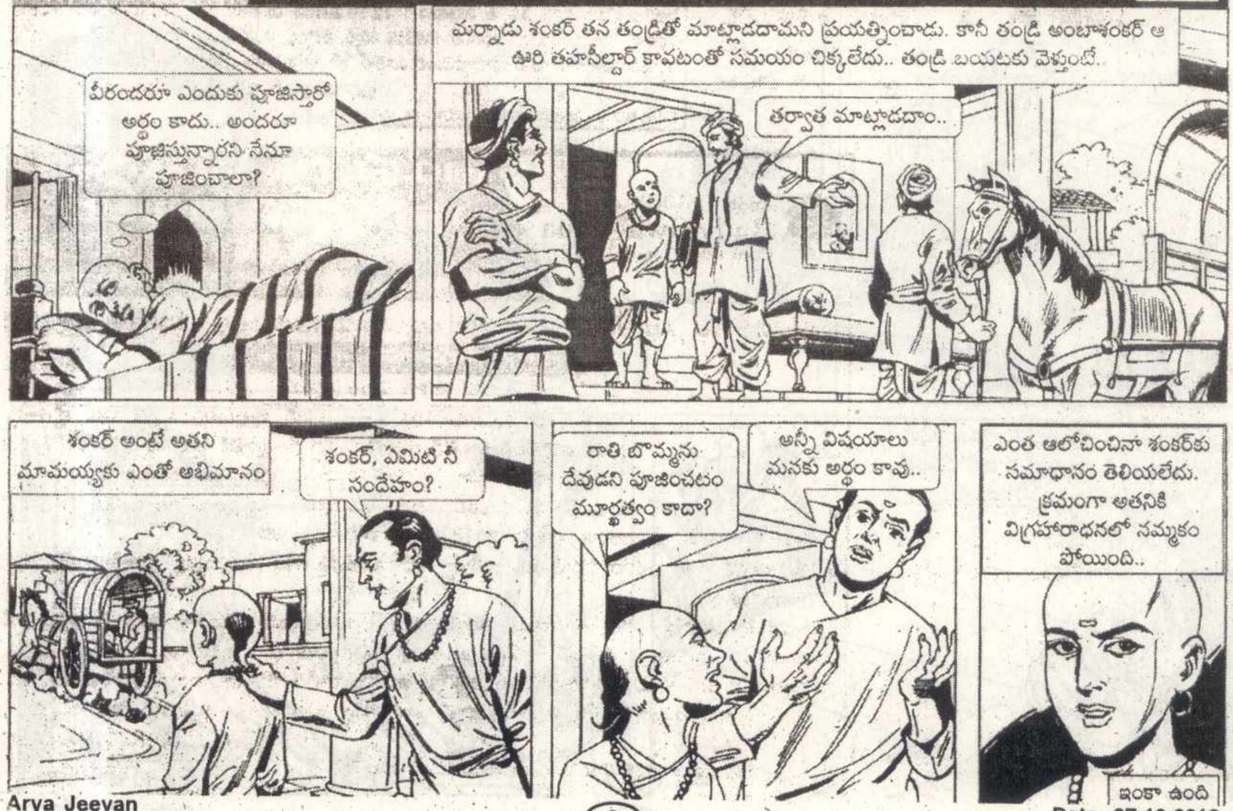

www.thearyasamaj.org

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి 5

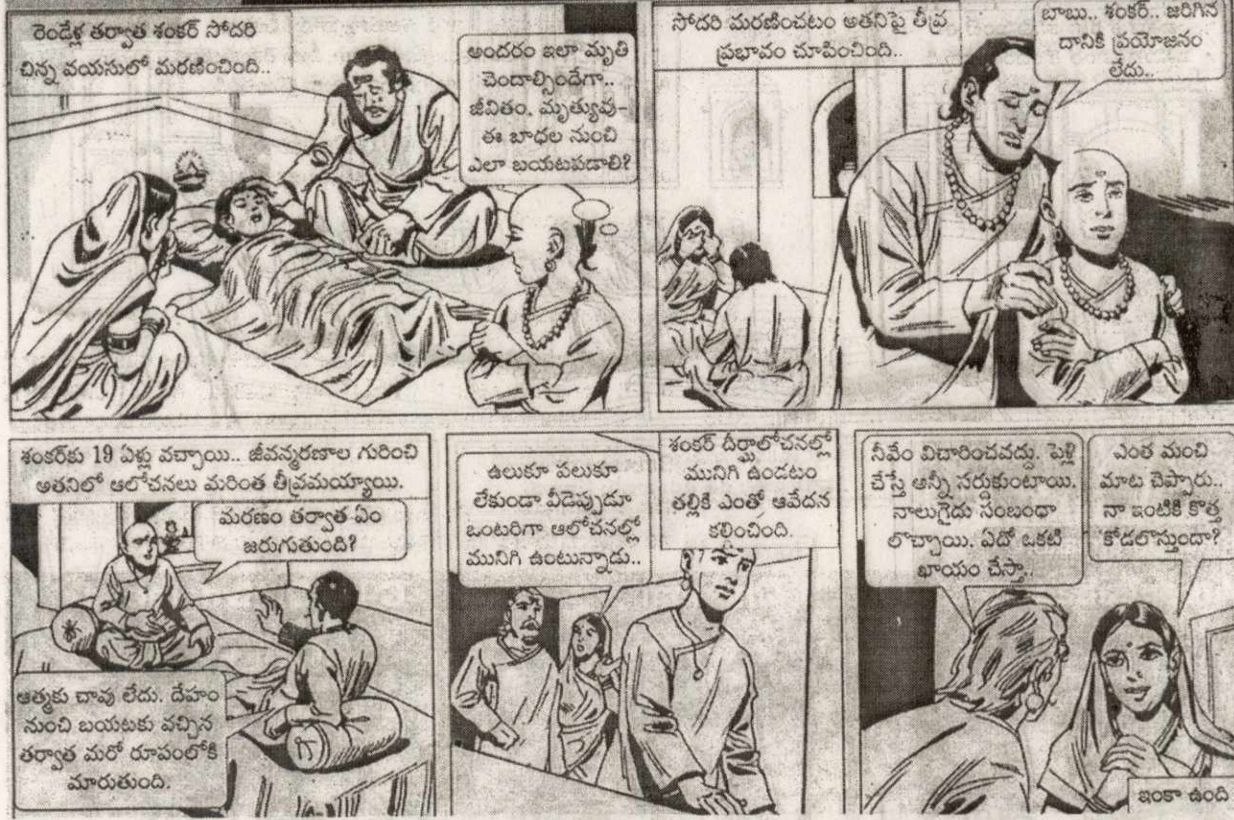

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి 6

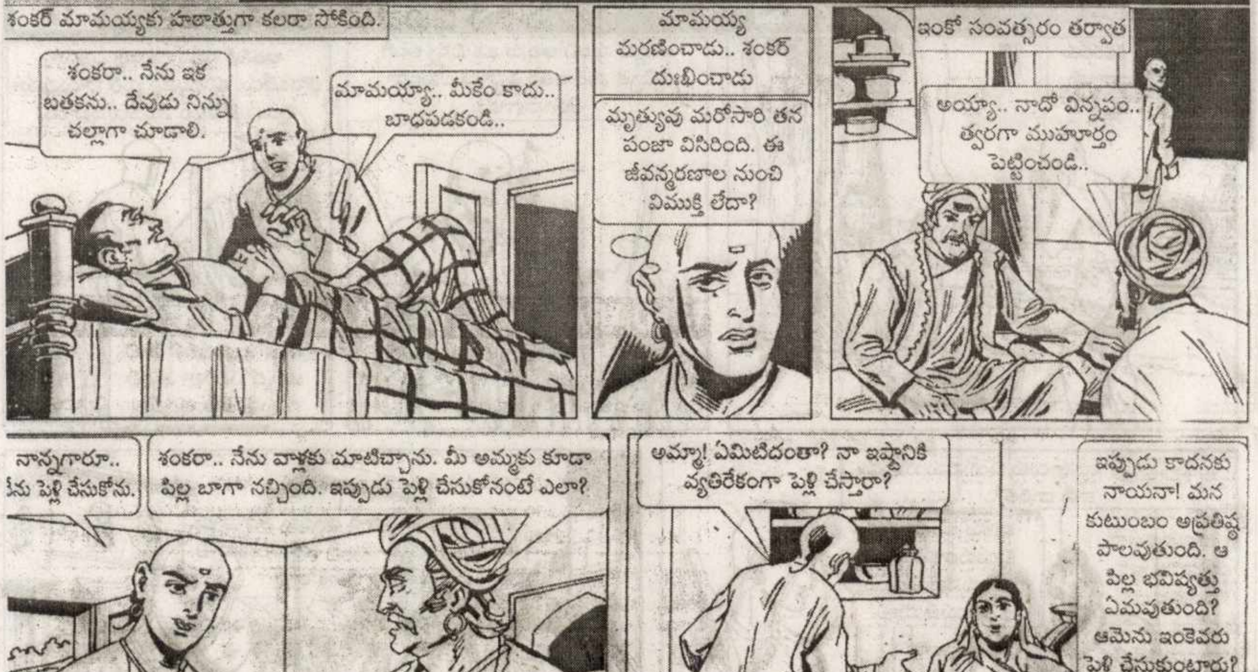

www.thearyasamaj.org

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి 7

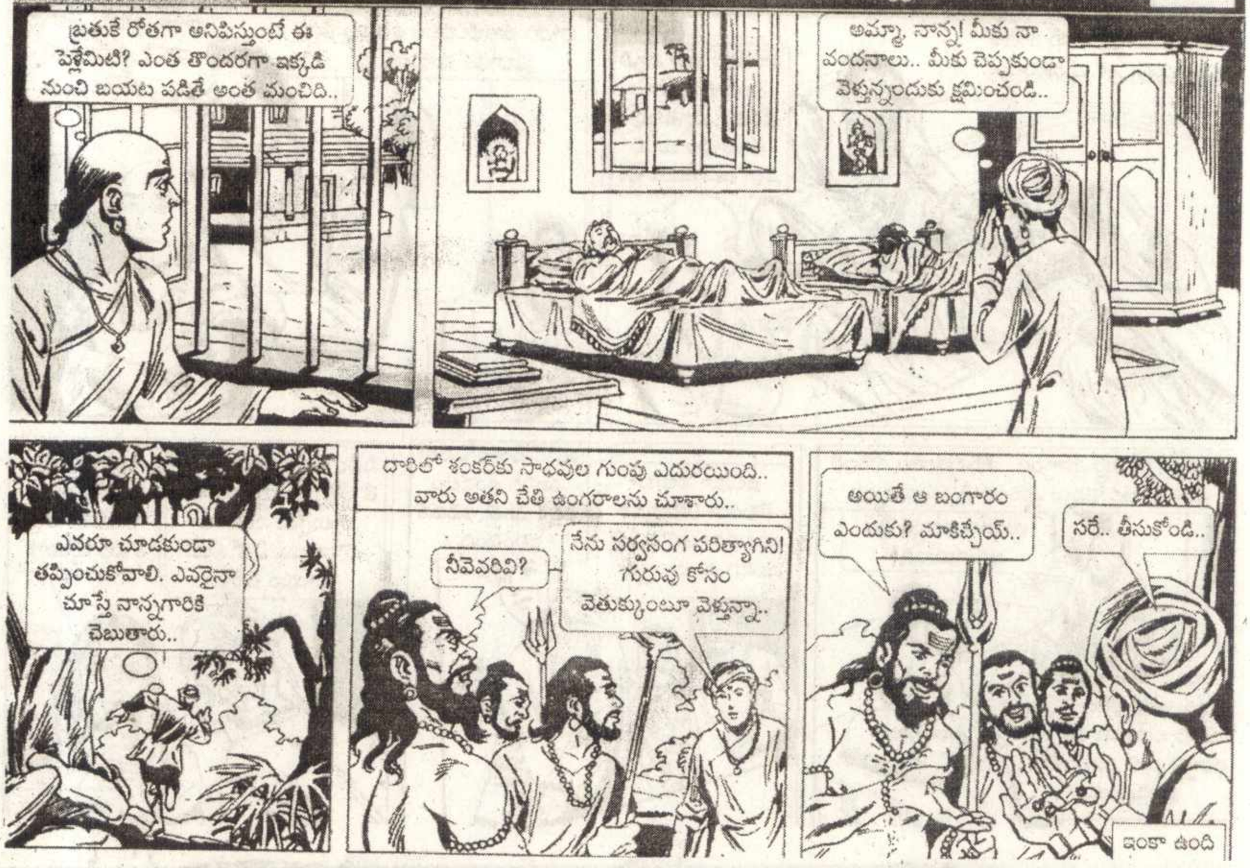

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి 8

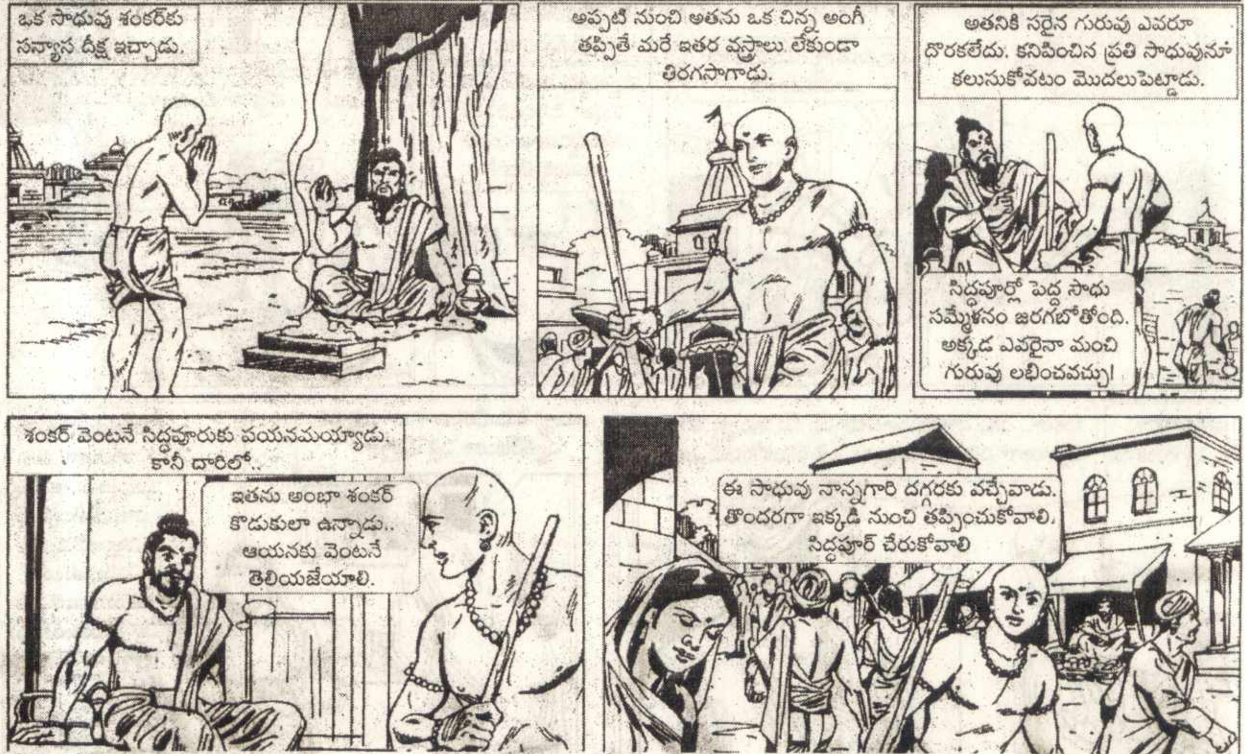

www.thearyasamaj.org

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి 9

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి 10

www.thearyasamaj.org

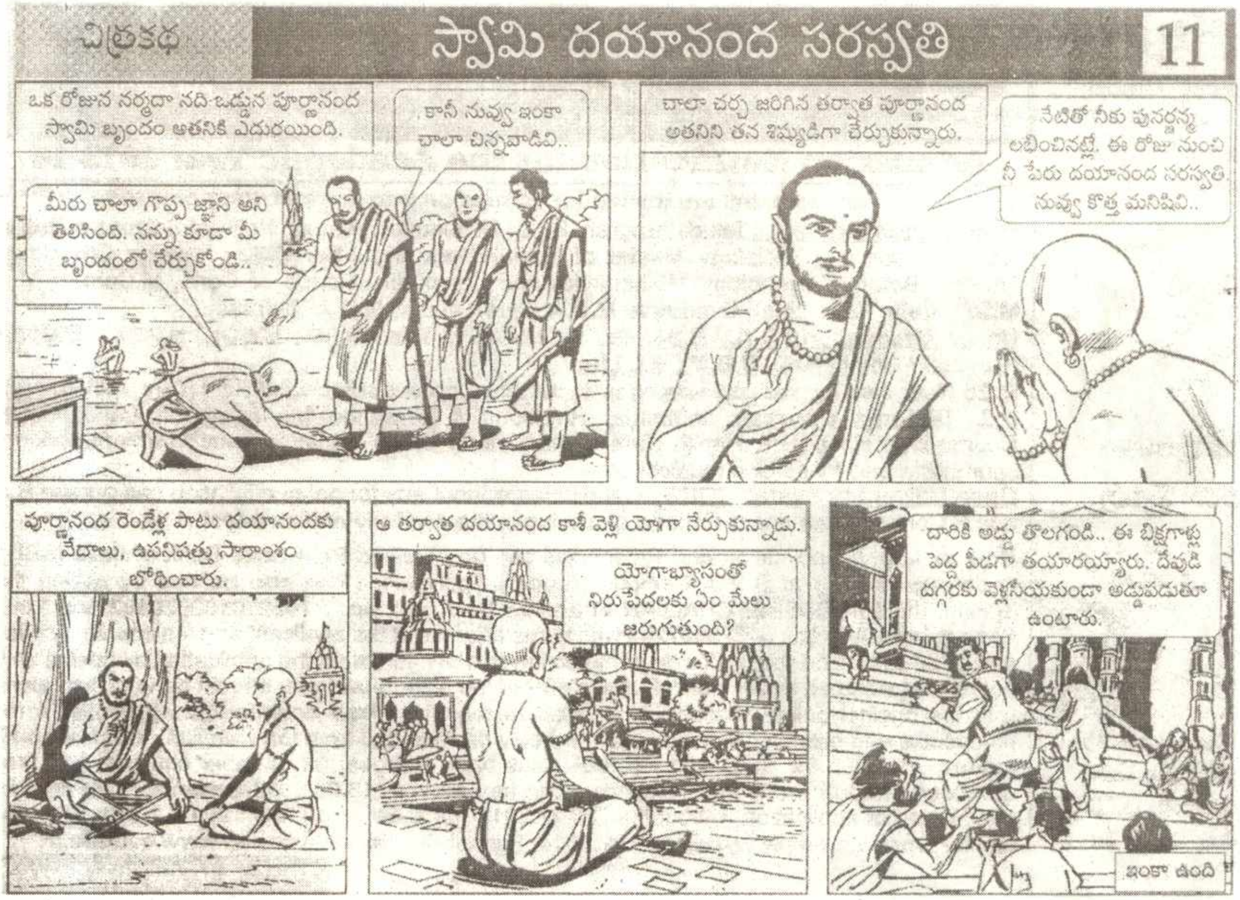

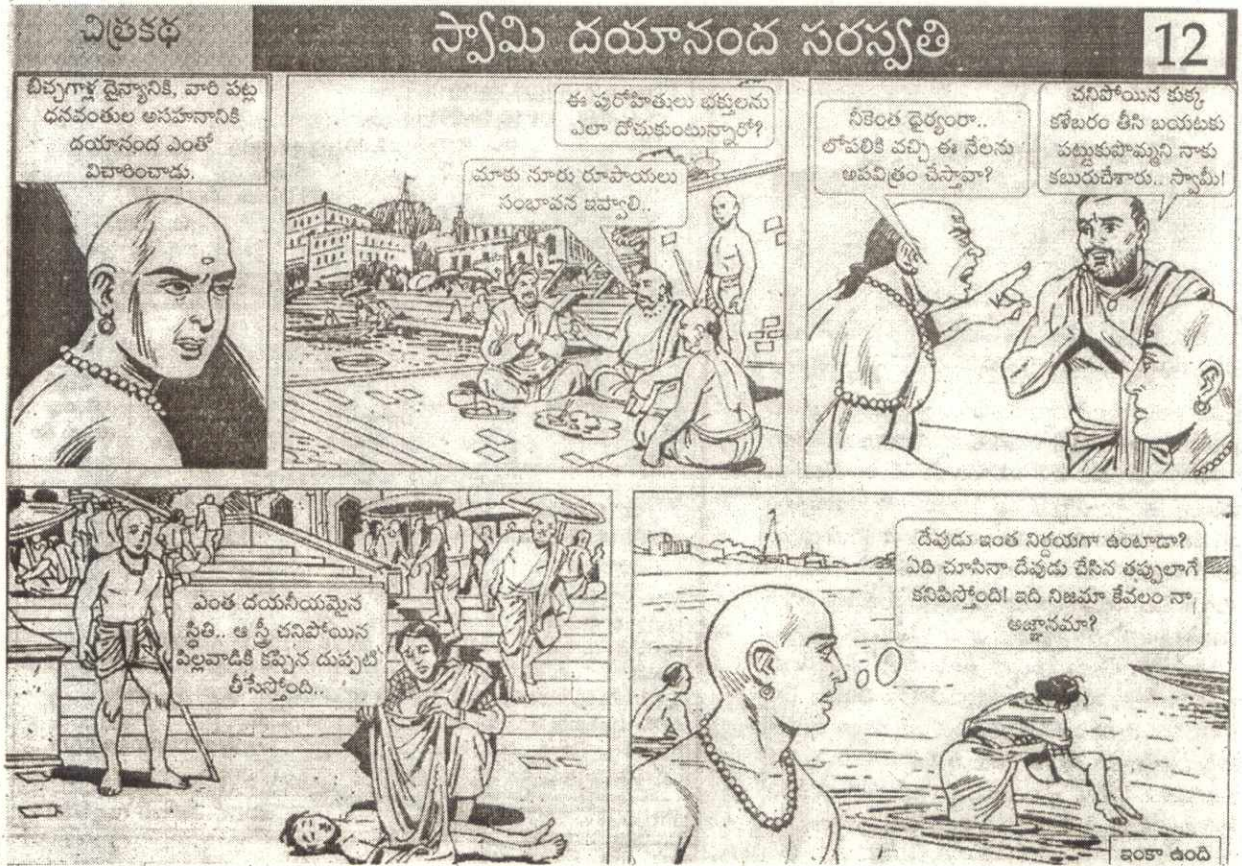

www.thearyasamaj.org

చిత్రకథ స్వామి దయానంద సరస్వతి 13

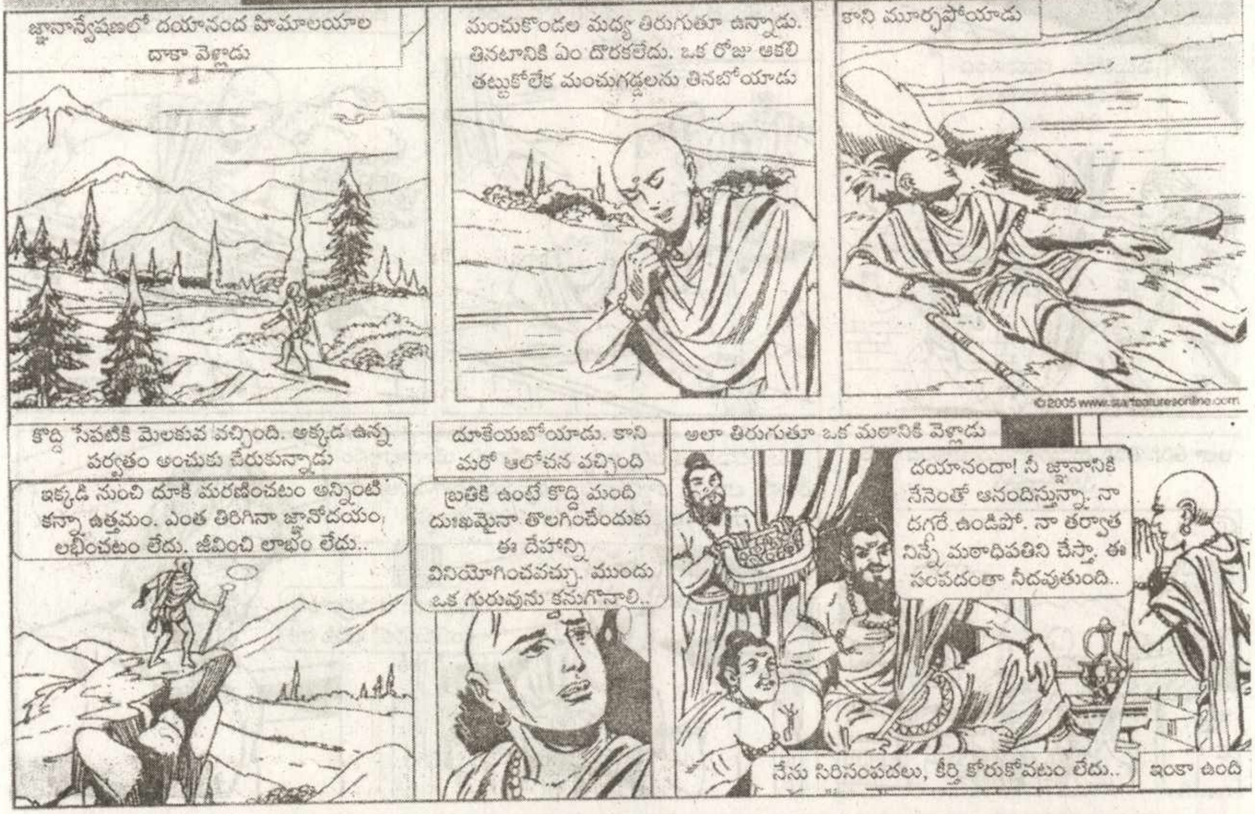

చిత్రకథ స్వామి దయానంద సరస్వతి 14

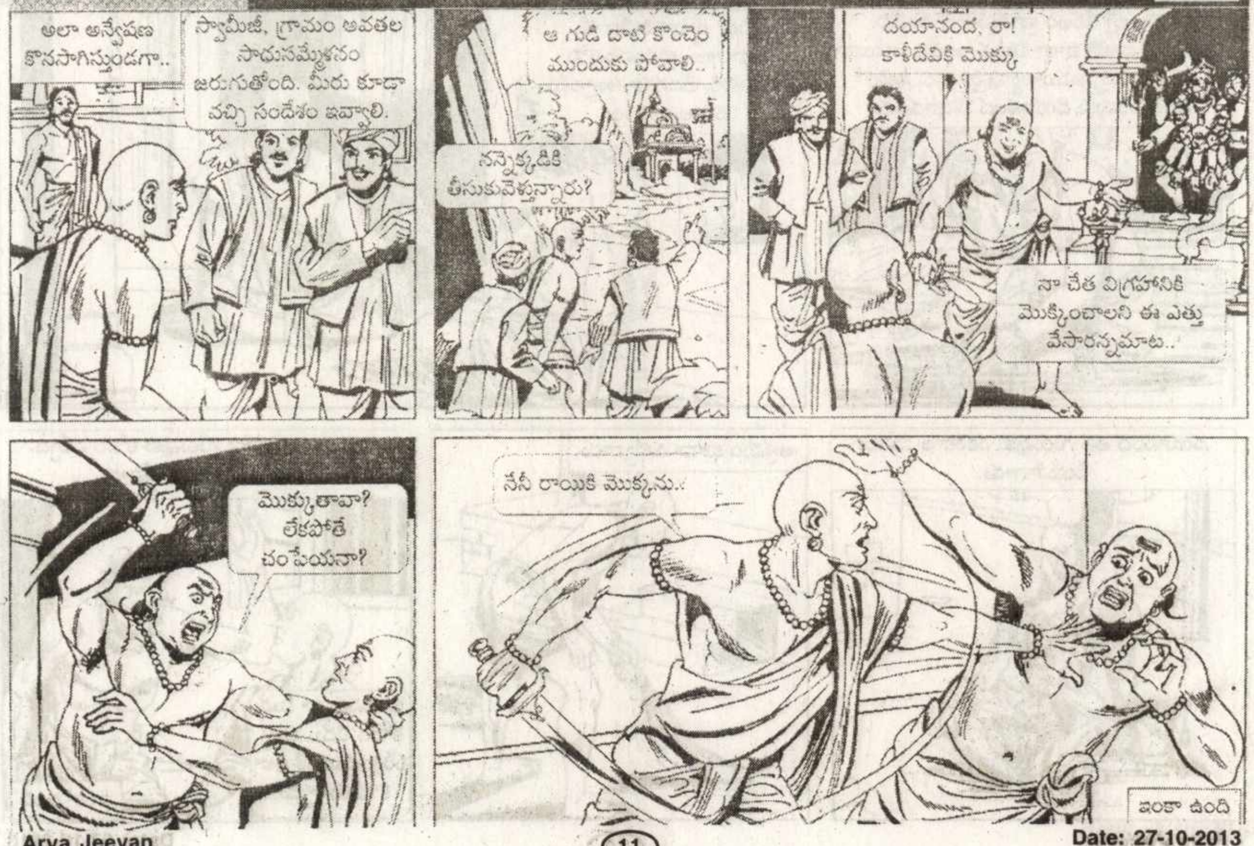

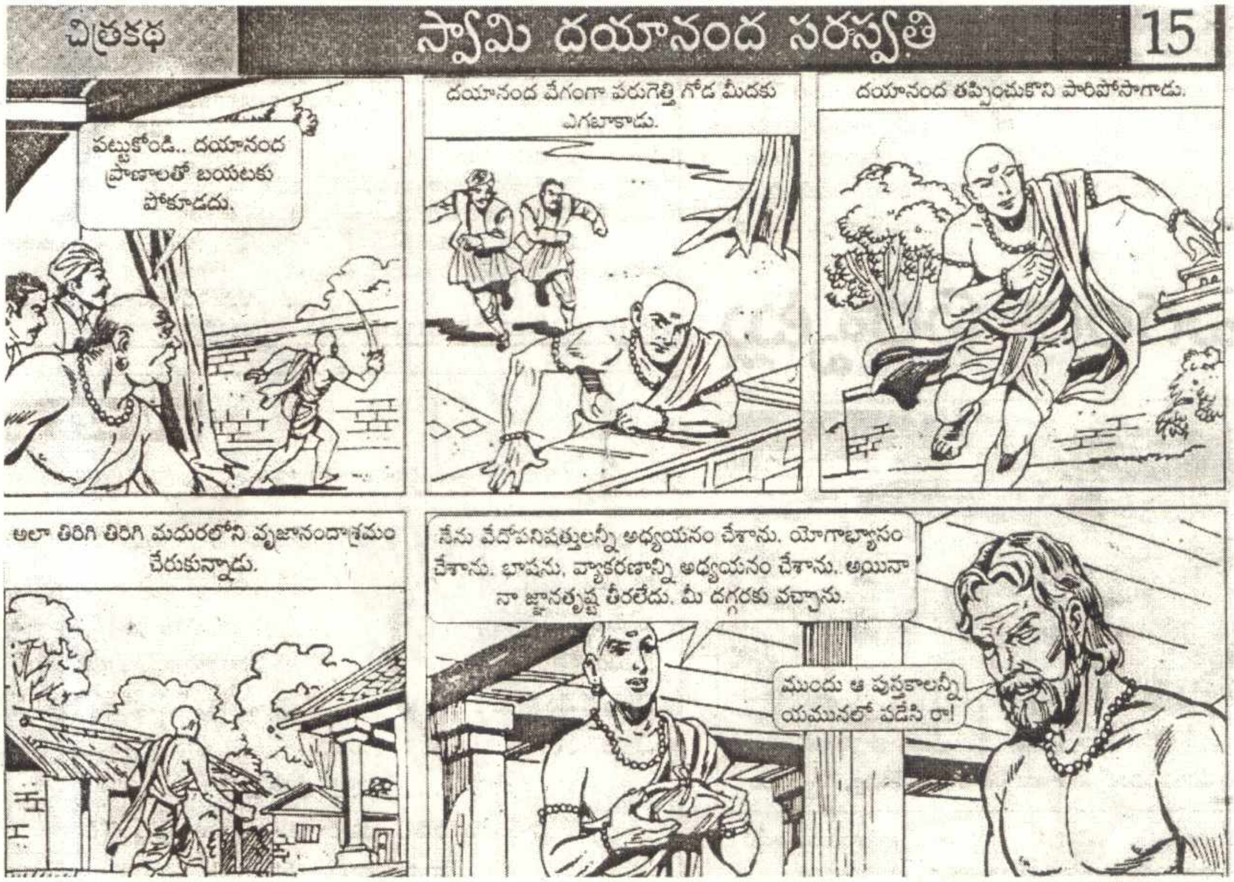
చిత్రకథ
స్వామి దయానంద సరస్వతి
15
పట్టుకోండి.. దయానంద ప్రాణాలతో బయటకు పోకూడదు.
దయానంద వేగంగా పరుగెత్తి గోడ మీదకు ఎగబాకాడు.
దయానంద తప్పించుకొని పారిపోసాగాడు.
అలా తిరిగి తిరిగి మధురలోని వృజానందాశ్రమం చేరుకున్నాడు.
నేను వేదోపనిషత్తులన్నీ అధ్యయనం చేశాను. యోగాభ్యాసం చేశాను. భాషను, వ్యాకరణాన్ని అధ్యయనం చేశాను.. అయినా నా జ్ఞానతృష్ణ తీరలేదు. మీ దగ్గరకు వచ్చాను.
ముందు ఆ పుస్తకాలన్నీ యమునలో పడేసి రా!

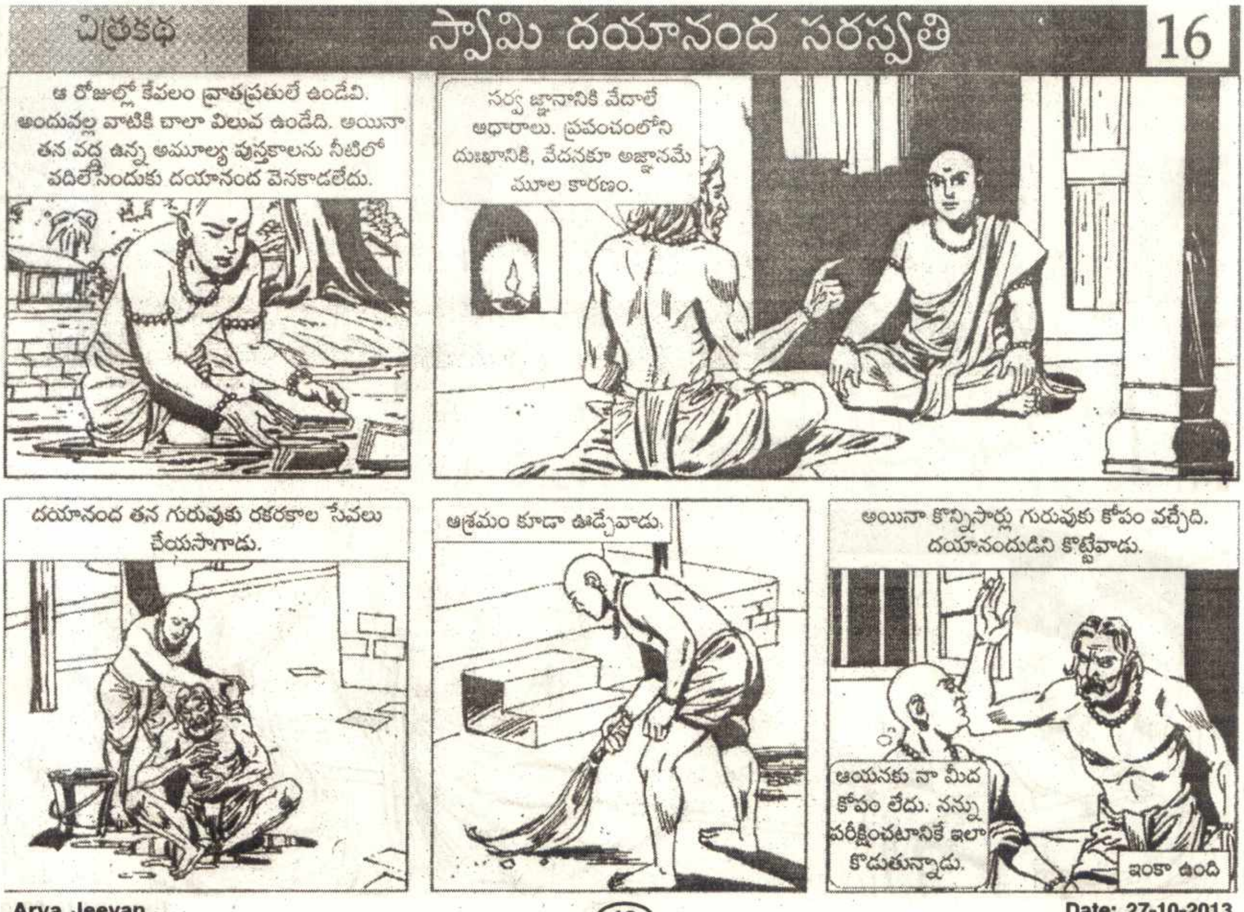
చిత్రకథ
స్వామి దయానంద సరస్వతి
16
ఆ రోజుల్లో కేవలం వ్రాతప్రతులే ఉండేవి. అందువల్ల వాటికి చాలా విలువ ఉండేది. అయినా తన వద్ద ఉన్న అమూల్య పుస్తకాలను నీటిలో వదిలేసేందుకు దయానంద వెనకాడలేదు.
సర్వ జ్ఞానానికి వేదాలే అధారాలు. ప్రపంచంలోని దుఃఖానికి, వేదనకూ అజ్ఞానమే మూల కారణం.
దయానంద తన గురువుకు రకరకాల సేవలు చేయసాగాడు.
ఆశ్రమం కూడా ఊడ్చేవాడు.
అయినా కొన్నిసార్లు గురువుకు కోపం వచ్చేది. దయానందుడిని కొట్టేవాడు.
ఆయనకు నా మీద కోపం లేదు. నన్ను పరీక్షించటానికే ఇలా కొడుతున్నాడు.
ఇంకా ఉంది

www.thearyasamaj.org

చిత్రకథ — స్వామి దయానంద సరస్వతి 17

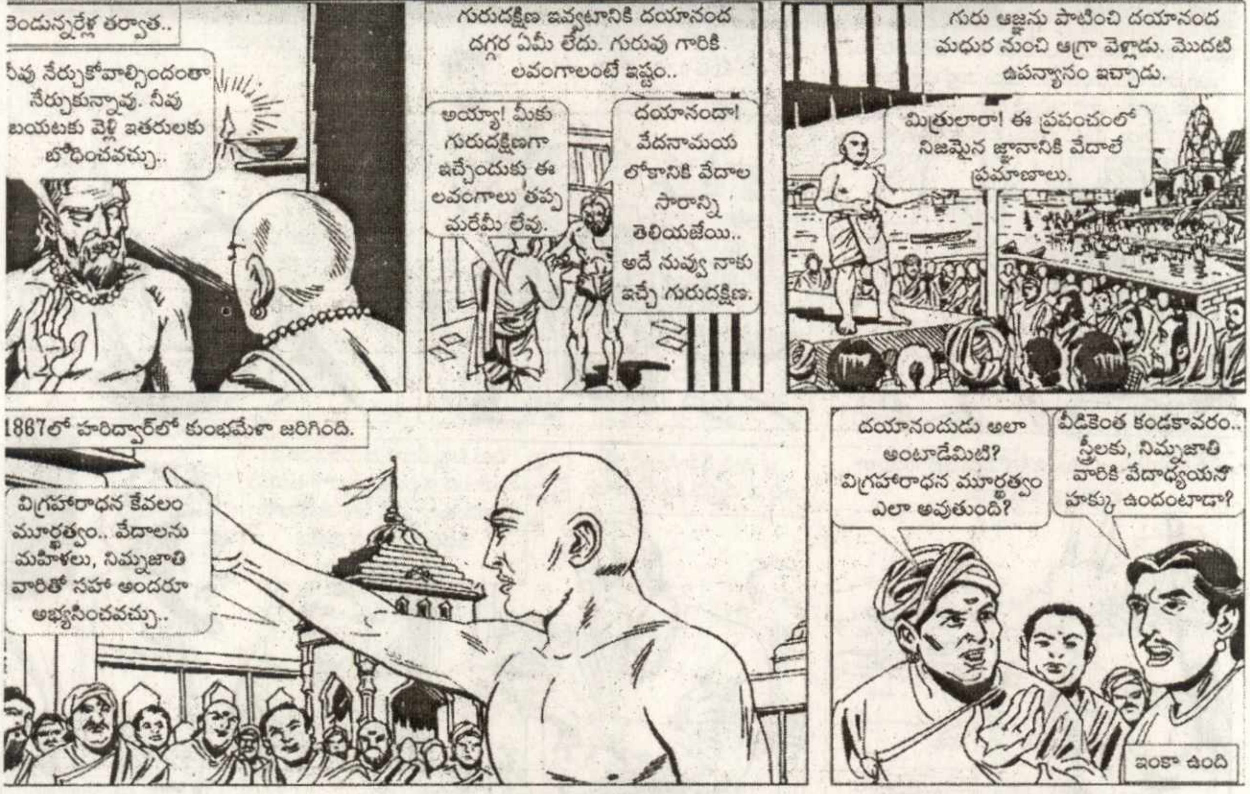

చిత్రకథ — స్వామి దయానంద సరస్వతి 18

చిత్రకథ స్వామి దయానంద సరస్వతి 19

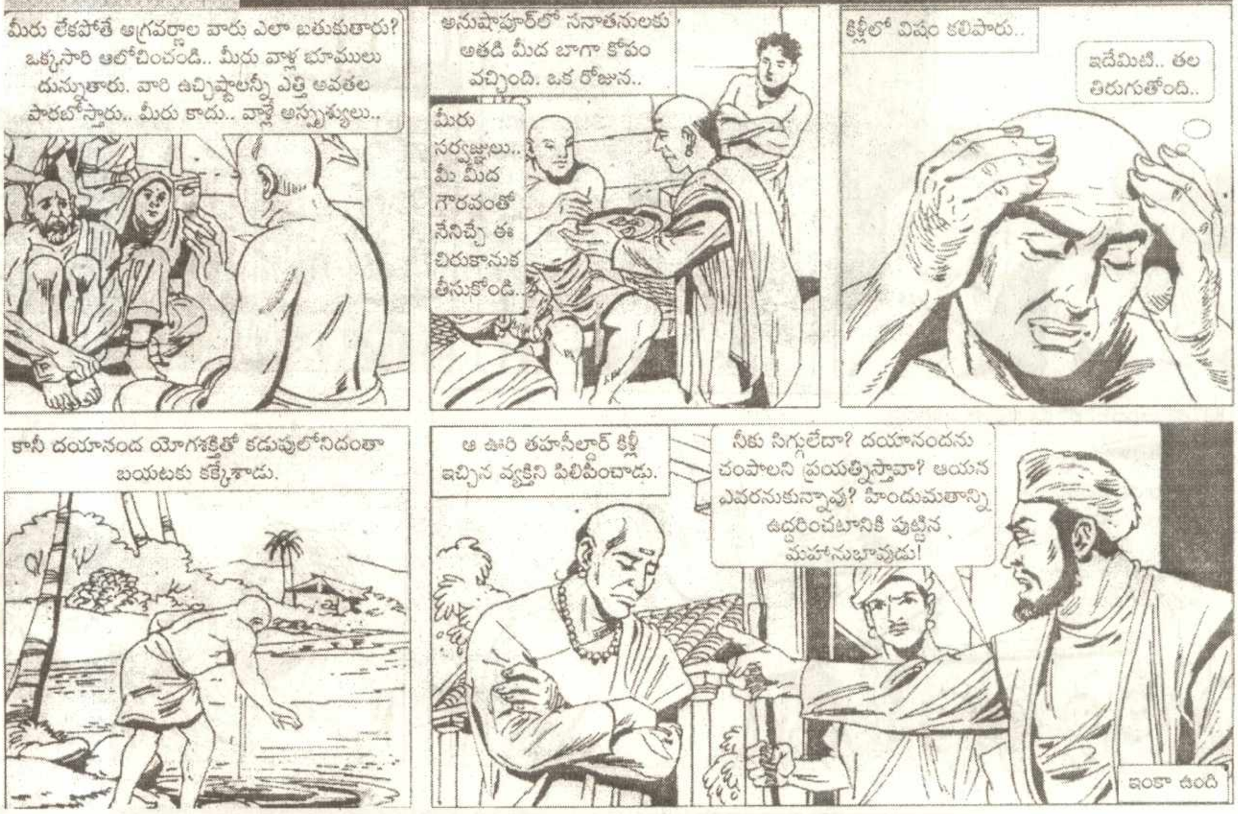

చిత్రకథ స్వామి దయానంద సరస్వతి 20

www.thearyasamaj.org

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి 21

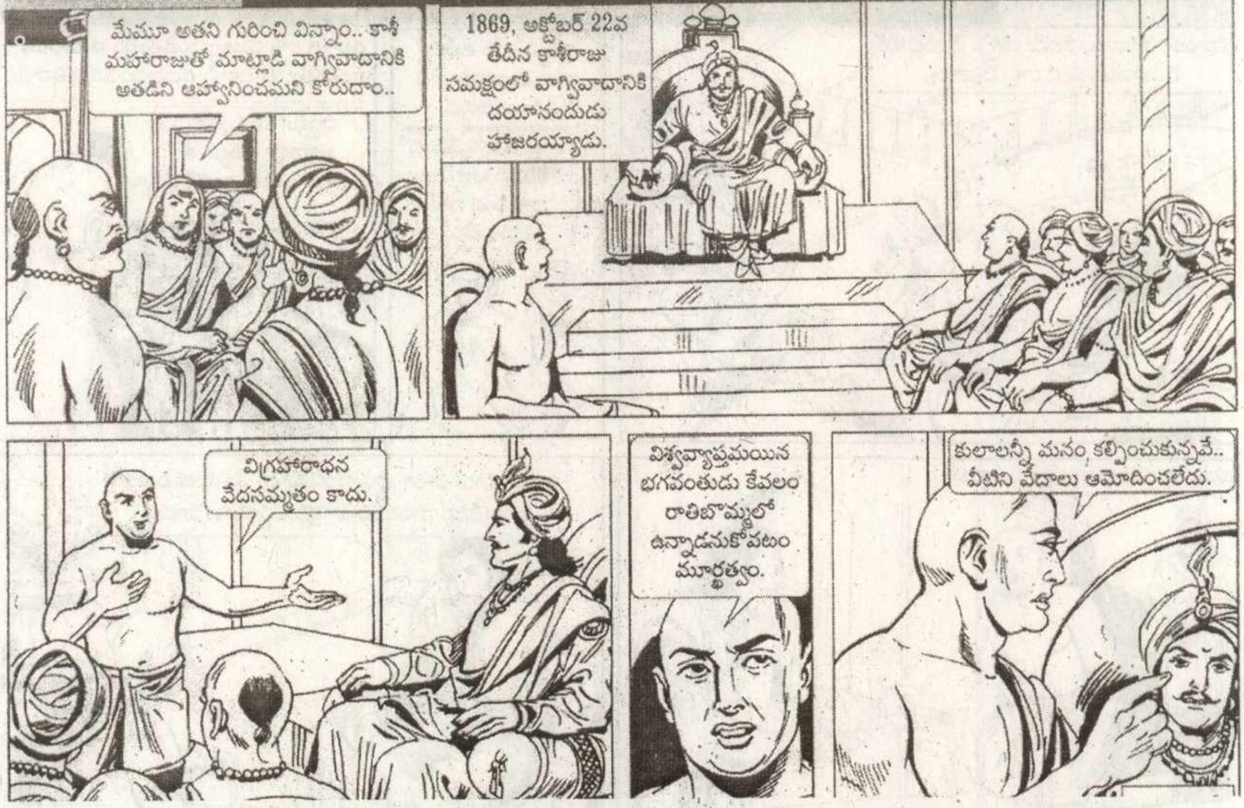

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి 22

www.thearyasamaj.org

చిత్రకథ స్వామి దయానంద సరస్వతి 23

చిత్రకథ స్వామి దయానంద సరస్వతి 24

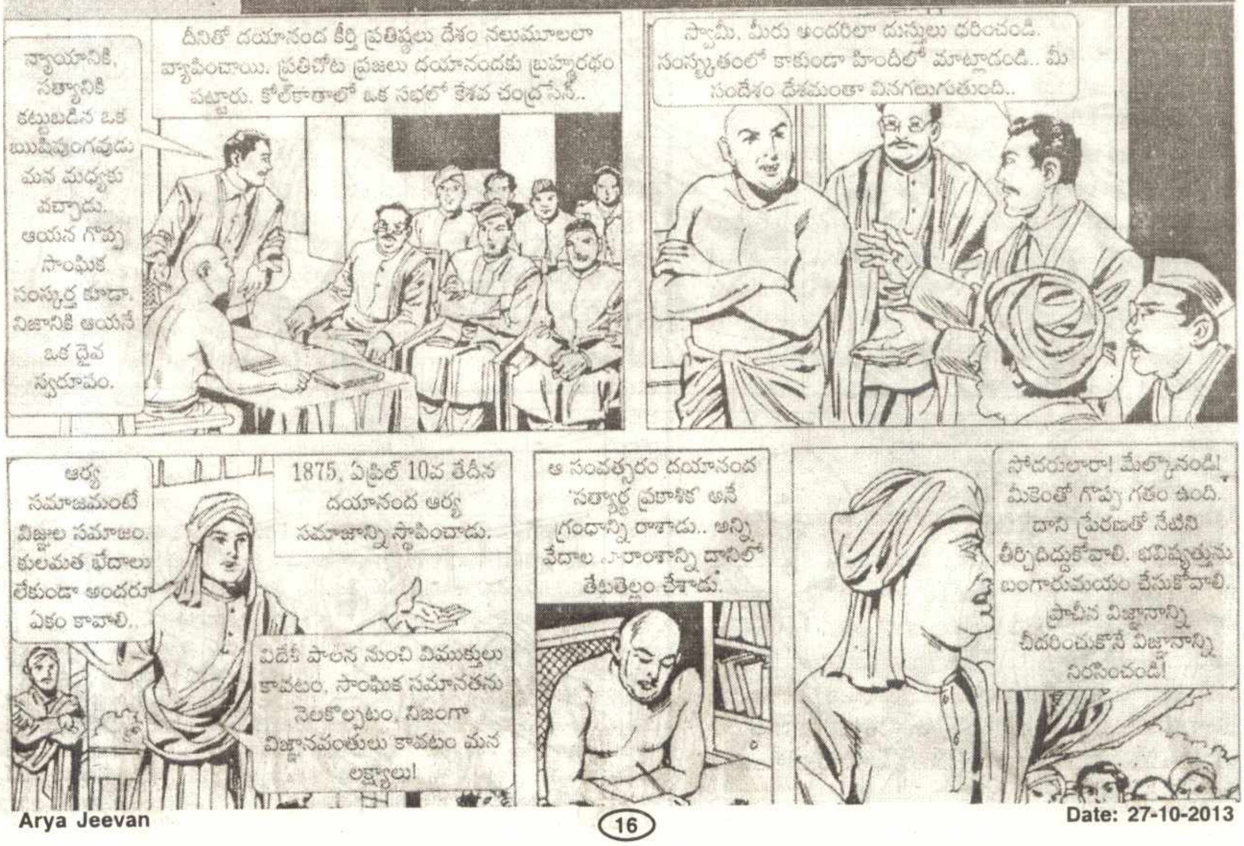

www.thearyasamaj.org

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి 25.

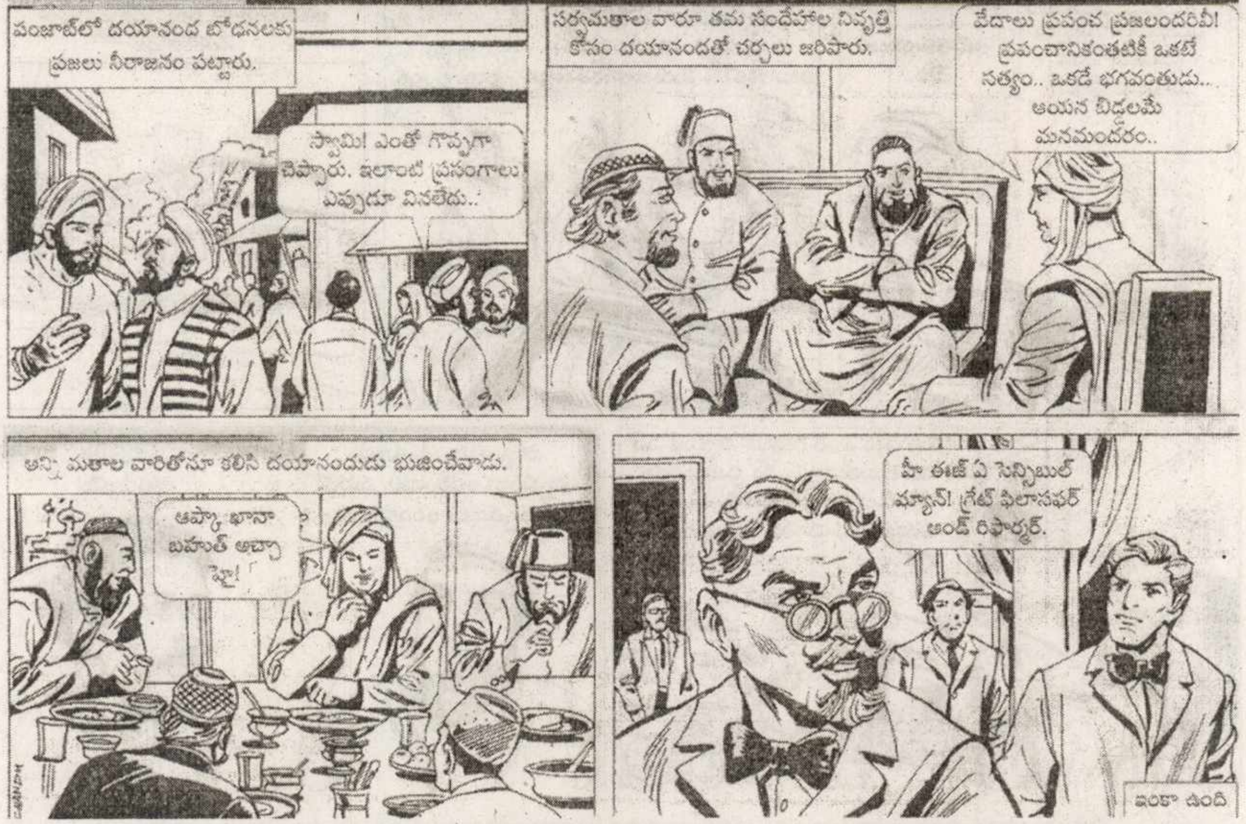

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి 26

www.thearyasamai.org

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

27

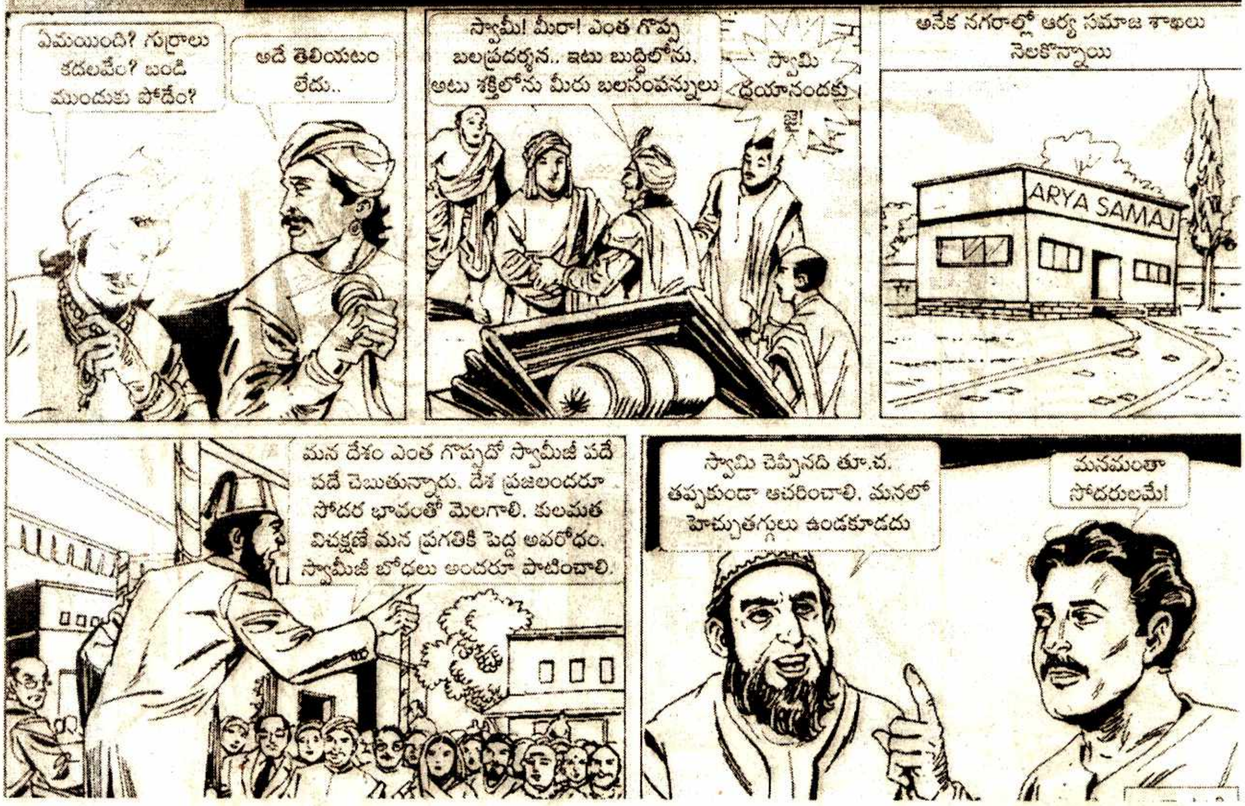

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

28

చిత్రకథ — స్వామి దయానంద సరస్వతి — 29

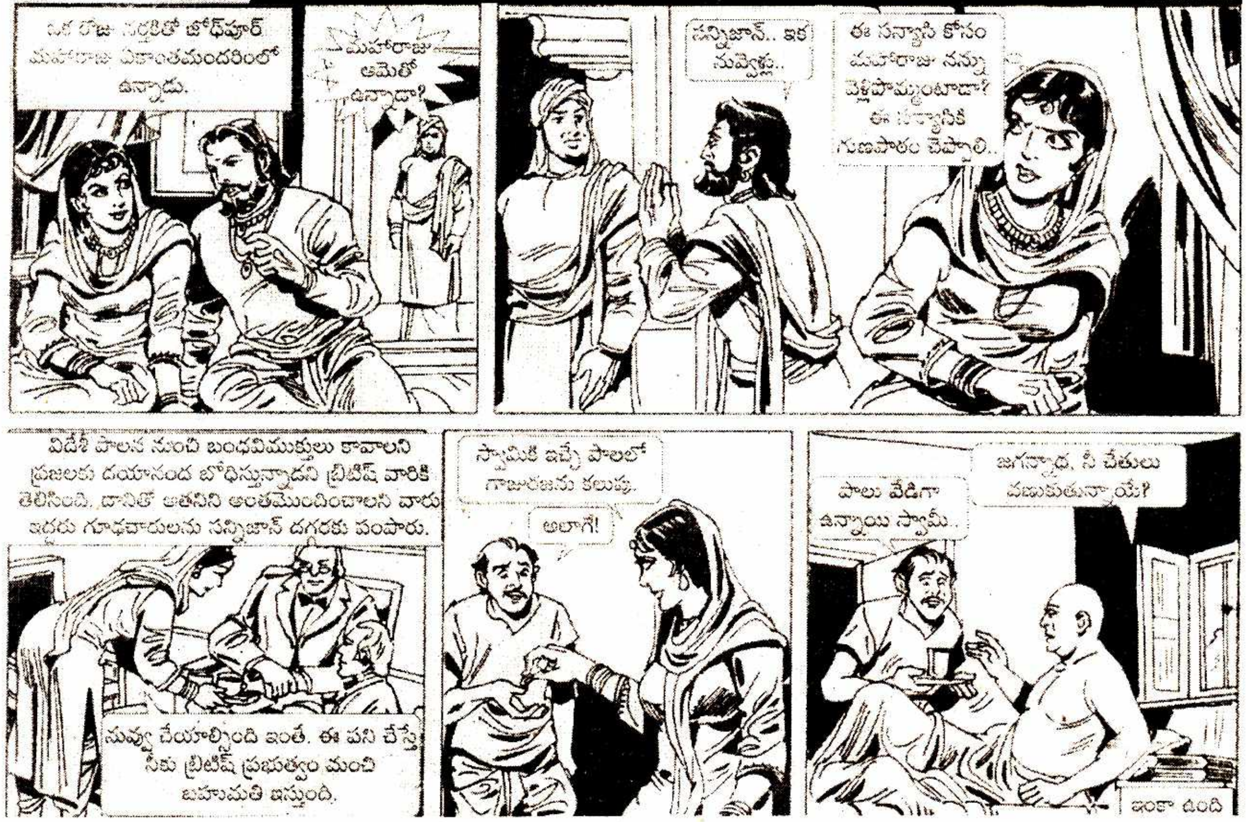

చిత్రకథ — స్వామి దయానంద సరస్వతి — 30

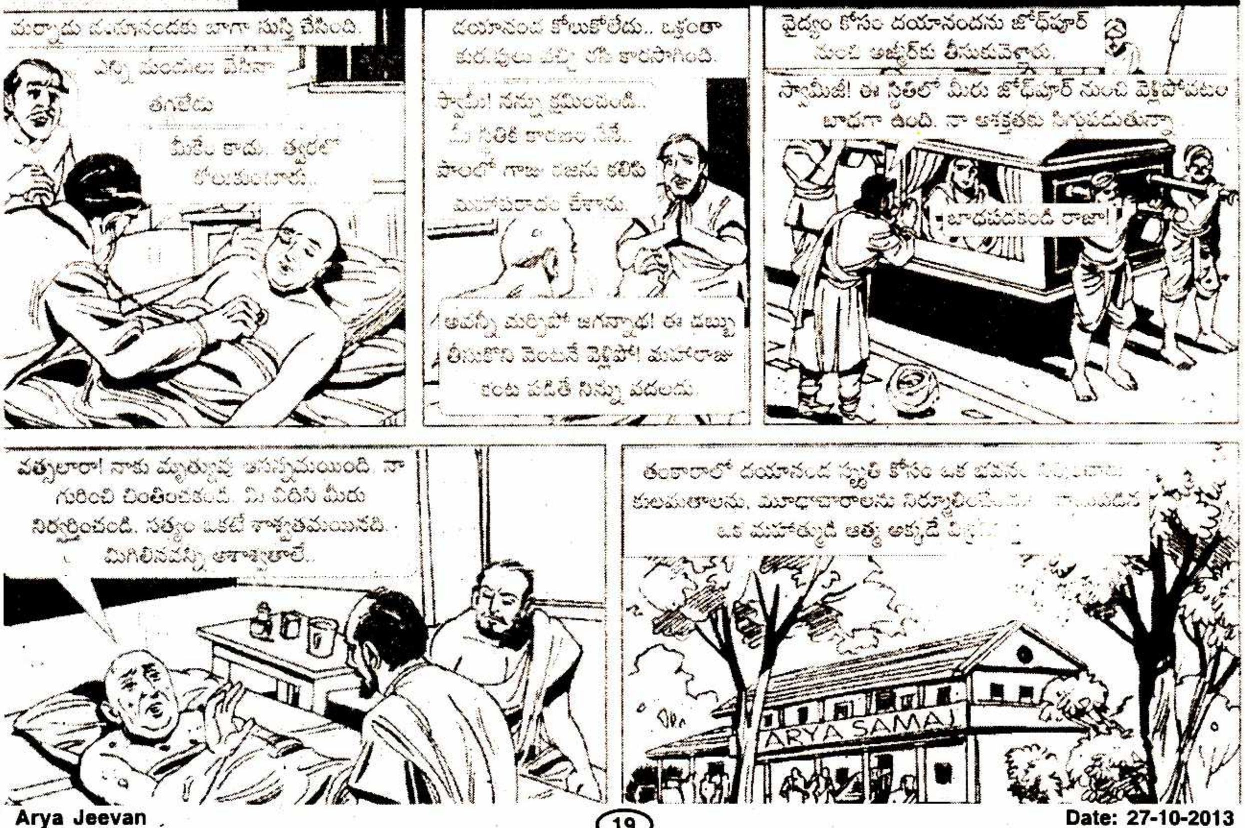

www.thearyasamaj.org

होने लगे और आर्यावर्त्त समस्त वैभव से पूर्ण हो गया। महाभारत काल तक आर्यावर्त्त में स्वर्णिम युग विद्यमान रहा। वेदों की सहायता से हमारे योग सिद्धि को प्राप्त ऋषि-मुनियों द्वारा धर्म, समाज, राष्ट्र व विश्व के लिए निष्पक्ष, न्याय से परिपूर्ण, मानव हितकारी व कल्याणकारी नियम व नीतियों का प्रचलन हुआ जिससे प्रत्येक मानव सुख-चैन से जीवन व्यतीत करते थे। **सृष्टि के आरम्भ में रचित मनुस्मृति ने व्यवस्था दी कि वेद अखिल धर्म-संस्कृति व सभ्यता का मूल है। ज्ञान से पवित्र वा मूल्यवान इस पूरे संसार में कुछ भी नहीं है। जीवन का उद्देश्य अभ्युदय व अपवर्ग अर्थात मोक्ष-मुक्ति की प्राप्ति है। प्रत्येक मनुष्य को वेदाज्ञा के अनुसार प्रातःसायं सन्ध्या अर्थात ईश्वर का ध्यान व चिन्तन, अग्निहोत्र-यज्ञ, पितृ यज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ एवं अतिथियज्ञ सम्पादित करने होते थे। शिक्षा में वेद एवं वेदों की व्याख्यायें करने वाले ग्रन्थ हुआ करते थे। इन पर आधारित विज्ञान-प्रौद्योगिकी व शिल्प विद्या का प्रचार था। सभी लोग सम्पन्न, स्वस्थ, निरोगी, दीर्घजीवी, परोपकारी, सेवाभावी, देशभक्त, मातृ-पितृ-आचार्य भक्त हुआ करते थे। ब्रह्मचर्य, योग-ईश्वरोपासना एवं यज्ञ आदि का सर्वत्र प्रचार था।** कोई भी मांसाहारी न होने के कारण पशु वध की कोई समस्या थी ही नहीं। समय-समय पर आवश्यकता होने पर हमारे ऋषि-मुनि मौखिक प्रचार के साथ वेदों व अन्य विद्याओं के सहायक ग्रन्थ बना देते थे जिनसे मिथ्या-विश्वास उत्पन्न ही नहीं होते थे। यह जान लेना आवश्यक है कि चारों वेद सभी सत्य विद्यायों के आकर ग्रन्थ हैं। मनुष्यों को अपना विवेक विकसित करने के लिए जितनी विद्यायें एवं ज्ञान आवश्यक है वह सब, आधा-अधूरा नहीं अपितु पूर्ण, सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने मनुष्यों को प्रदान किया था। इस प्रकार लगभग 1.96 अरब वर्ष तक वैदिक धर्म अबाध रूप से आर्यावर्त्त भारत व सारे भूगोल व विश्व में विद्यमान रहा। इसका प्रमाण सृष्टि की आयु 1,96,08,53,113 वर्ष होना है एवं संसार का प्रथम व प्रमुख वेदेतर धार्मिक ग्रन्थ जिन्दावस्था का मात्र लगभग 2,500 वर्ष पूर्व अस्तित्व में आना है। **इससे पूर्व सारी दुनियां में वेद एवं वैदिक साहित्य ही मात्र धर्म व कर्तव्यों का ग्रन्थ या पुस्तक थी और सभी लोग उसी का आचरण किया करते थे।** जिन्दावस्था से लेकर अब तक नाना मत-मतान्तर उत्पन्न हुए जिनका मुख्य कारण धर्म व कर्तव्य-अकर्तव्य के ज्ञान में भ्रान्तियों का होना था। भारत में बौद्ध मत, जैन मत, पौराणिक मत, अद्वैत मत तथा विदेशों में यहूदी, ईसाई मत, इस्लाम मत आदि का आविर्भाव हुआ। धर्म व कर्तव्य-अकर्तव्य में भ्रान्तियों का कारण आज से लगभग 5,000 वर्ष पूर्व "महाभारत" का महायुद्ध था जिसके कारण भारत में सर्वत्र शिक्षा व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई। अन्धकार में प्रायः ऐसा होता है कि कोई भी वस्तु अपने यथार्थ स्वरूप में न दिखने के कारण उसके अनुरूप भिन्न-2 कल्पनाओं का सहारा लेना पड़ता है जिसमें कुछ सत्य व कुछ असत्य होती हैं। इसी प्रकार महाभारत के बाद अज्ञानता के काल में हुआ। महाभारत के समय में भारत में अन्तिम ऋषि जैमिनी या बादरायण हुए। उनके बाद से ऋषियों व वेदों के पारदर्शी विद्वानों की परम्परा अवरूद्ध हो गई। अल्प ज्ञानी लोगों ने अपनी अल्प मति से धार्मिक, कर्तव्य व अकर्तव्य के नये-नये ग्रन्थ बनाये व प्रचार किया जो सत्य व असत्य मान्यताओं व नियमों से मिश्रित थे। अज्ञान बढ़ता रहा और महाभारत के कुछ सौ वर्षो बाद मध्यकाल आ गया जब धर्म सम्बन्धी मान्यताओं में अधिकांशतः असत्य व अविवेक पूर्ण मान्यताओं के प्रचार व आचरण का समय था। इसी कारण कालान्तर में नाना प्रकार के मत-मतान्तर उत्पन्न हुए जिनता उल्लेख पूर्व पंक्तियों में किया गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सृष्टि की आदि में ईश्वर द्वारा वेदों के प्रादुर्भाव से **वेद मत-धर्म अस्तित्व में आया। महाभारत के बाद वैदिक धर्म में जो भ्रान्तियां उत्पन्न हुई उनसे देश-विदेश में नाना प्रकार के मत-मतान्तरों की नींव पड़ी। धीरे-धीरे इन सभी मत-मतान्तरों से इनके अनुयायियों के हित व स्वार्थ जुड़ गए। आज सब अपने-अपने अज्ञान व भ्रान्तिपूर्ण मतों में स्थित हैं। वह यह जानना ही नहीं चाहते कि उनमें कुछ कमियां हैं या नहीं। कमियों को जानने व उन्हें दूर करने का कोई प्रयास ही नहीं किया जाता है।** *यदि वैज्ञानिकों के कार्यो पर दृष्टिपात करें तो हमें लगता है कि विज्ञान की उपलब्धियों का कारण उनका सत्य को ग्रहण करना व असत्य को त्याग देना है।* धर्म में ऐसा न होने के कारण मत-मतान्तरों की संख्या बढ़ती जा रही है जबकि वैज्ञानिक सभी विषयों में एक मत हैं। धर्म के क्षेत्र में भी ऐसा ही होना चाहिये था। परन्तु अब यह वर्तमान व निकट भविष्य में सम्भव नहीं प्रतीत नहीं होता। यह होना तो एक दिन अवश्य है क्योंकि **survival of the fittest की भांति धर्म के क्षेत्र में सत्य को अवश्यमेव ही प्रतिष्ठित होना है। जो मत सत्य पर 100 प्रतिशत अवलम्बित होगा, वही ठहर पायेगा, अन्य नहीं।**

हम यहां दो उदाहरणों से यह कहना चाहते हैं कि ईश्वरीय ज्ञान वही होगा जो सृष्टि की उत्पत्ति या आरम्भ में दिया जाये और जिसे बाद में कभी भी बदलने की आवश्यकता न हो। यदि यह कहा जाये कि आरम्भ में दिया गया ज्ञान भी ईश्वरीय है और बाद में संशोधित या परिवर्तित ज्ञान भी ईश्वरीय है तो इससे ईश्वर प्रदत्त पूर्ण ज्ञान की त्रुटियां व अपूर्णतायें ज्ञात होतीं हैं जिससे

విజయదశమి పర్వదిన మహోత్సవము-ఓమ్ పతాక ఊరేగింపు

ఆర్య సమాజ మందిరములో విజయదశమి పండుగ సందర్భమున విజయ నామ సం॥ ఆశ్వీజ శుద్ధ దశమి (దివి 13-10-2013) ఉదయం 9-15 గంటలకు ఓం పతాక ఆవిష్కరణ ... గాయత్రీ దేవయజ్ఞము - దసరాను పురస్కరించుకొని ప్రత్యేక ఆహుతులు ఇవ్వబడి ... సర్వ పురోభివృద్ధికి దేశముల శాంతి నెలకొనవలెనని ఈశ్వరున్ని ప్రార్థిస్తూ కార్యక్రమము నిర్వహించబడినది ఇందులో ఆర్యసమాజికులు పాల్గొనిరి. సాయంత్రం 4-00 గంటలకు ఆర్య సమాజ భవనము నుండి ఓమ్ పతాక ఊరేగింపుల శమీవృక్షము వరకు సుమారు 500 మంది పాల్గొని శమీ పూజను నిర్వహించి పరస్పరము జమ్మి ఆకును ఇచ్చి విజయదశమి శుభాకాంక్షలు తెలుపుకొనిరి. ఆర్యసమాజము ప్రత్యేక వాహనము ద్వార ఊరేగింపు జరిపి సాయంత్రం 6 గంటలకు శాంతిపఠనముతో భగవంతుడు ప్రజలందరికి శుభం కలుగవలెనని ప్రార్థించిరి.

పసుపర్తి వెంకటేశ్వరరావు గుప్త

www.thearyasamaj.org

ईश्वर के ज्ञान में वृद्धि-ह्रास या घटना-बढ़ना सिद्ध होता है जो कि असम्भव है। इस कथन को इस उदाहरण से समझा जा सकता है कि माता-पिता सन्तान के उत्पन्न होने के बाद उसकी बौद्धिक व शारीरिक क्षमता के अनुसार उसे ज्ञान देना आरम्भ कर देते हैं। मां बच्चे को गोद में लेकर दूध पिलाती है और उस समय जिस प्रकार की भावना करती या होती है उसका बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य या ज्ञान की वृद्धि पर प्रभाव पड़ता है। उसको सुलाने के लिए या उसे प्रसन्न करने वा व्यायाम या मालिश आदि करते समय जो वचन या लोरियां माता के मुख से उच्चारित होती हैं, वह भी एक प्रकार बच्चे को दिया जा रहा ज्ञान है। इसी प्रकार पिता के वचनों को सुनकर वह अपने माता-पिता को उनके स्वर, ध्वनि या आवाज से पहचानने लगता है। बच्चा बड़ा होता रहता है और माता-पिता भी उसे उसकी समझ में आने वाली बातें बताते रहते हैं। जब पांच वर्ष या इससे अधिक वय का होता है तो उसे आचार्यकुल, पाठशाला या विद्यालय में भेजते हैं जिससे वह नियमित शिक्षा प्राप्त कर ज्ञानी व विद्वान बने। यहां हम यह देखते हैं कि बच्चे को माता-पिता ने ज्ञान देना जन्म के लगभग साथ ही आरम्भ कर दिया है। ज्ञान प्राप्ति का यह क्रम मृत्यु पर्यन्त नाना रूपों में चलता है। पहले ज्ञान प्राप्त किया जाता है और बाद के समय में नये ज्ञान की प्राप्ति के साथ पूर्व अर्जित ज्ञान को पुनरावृत्ति द्वारा परिपक्व किया जाता है। कोई भी माता पिता बच्चे को अधूरा, अपूर्ण, असत्य, सृष्टि क्रम का विरोधी व उसके शारीरकि, समाजिक व बौद्धिक व आत्मिक ज्ञान के विरूद्ध शिक्षा नहीं देता है। वह वहीं ज्ञान देते हैं जो उनको विदित होता है। इसी प्रकार पूर्ण ज्ञानवान सर्वज्ञ ईश्वर भी सृष्टि के आरम्भ में युवा स्त्री-पुरूषों को पूर्ण ज्ञान देता है, अधूरा व परिवर्तनीय ज्ञान नहीं देता। अतः इस सिद्धान्त के विरूद्ध मतमतान्तरों द्वारा जो विचार व तर्क दिए जाते हैं वह असत्य, भ्रामक व अपने मत की असत्य युक्तियों से रक्षा के उपाय होते हैं जिससे अल्प बुद्धि लोग ही भ्रमित होते हैं। यदि ईश्वर को बाद में या समय-समय पर परिवर्तन करने पड़ते हैं तो उन संशोधनों के लाभ से पूर्व जन्में व मृतक जीवात्मायें वंचित रहने से इसका दोष भी परमात्मा पर आता है। यह असत्य है और यह सब बातें कल्पित व भ्रान्त मत के अनुयायियों की मिथ्या युक्तियां ही सिद्ध होती हैं।

ज्ञान के उत्थान व पतन की कहानी को हम नदियों व वर्षा के उदाहरण से भी समझ सकते हैं। सृष्टि के आरम्भ में वेदों का ज्ञान ईश्वर से प्राप्त हुआ जो कि पूर्ण था और जिसमें किसी प्रकार की कोई न्यूनता या त्रुटि नहीं थी। आर्यावर्त के तिब्बत में मनुष्यों की उत्पत्ति के बाद मनुष्य धीरे-धीरे सारी दुनियां में फैलते रहे और वेदों के अनुसार जीवनयापन करते रहे। भारत के ऋषि-मुनियों ने भी सारे विश्व में जहां-जहां मानव थे, वेद धर्म के प्रचार की सुन्दर व्यवस्था कर रखी थी। इस कारण महाभारत काल तक अन्य कोई मत संसार में उत्पन्न नहीं हुआ। महाभारत काल के बाद वेद-धर्म के प्रचार की व्यवस्था छिन्न-भिन्न या बाधित हुई जिससे ज्ञान घटता गया और अज्ञान बढ़ता गया। सूर्य का प्रकाश जहां तक पहुंचता है, वहां सभी वस्तुएं स्पष्ट दृष्टिगोचर होती हैं और जहां वह प्रकाश नहीं पहुंचता वहां अन्धकार होने के कारण वस्तुएं स्पष्ट दृष्टिगोचर नहीं होती। अतः ज्ञान न होने, अज्ञान होने या भ्रममूलक ज्ञान के कारण मत-मतान्तर अस्तित्व में आते हैं। नदी के उदाहरण से इसे इस प्रकार जान सकते हैं कि जहां-जहां नदी जाती है उसके दोनों ओर के स्थान हरे-भरे होते हैं। वहां कृषि का कार्य उत्तम प्रकार से सम्पादित होता है। बड़ी नदियों से उसकी शाखायें निकाल कर विस्तृत भाग में सिंचाई कर कृषि उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है जिससे ऊसर भूमि भी कृषि योग्य बन जाती है। परन्तु असिंचित भूमि में कृषि की फसल या तो होती नहीं या अच्छी नहीं होती। **इसी प्रकार "सत्य वैदिक धर्म" का प्रचार यदि किन्हीं स्थानों में नहीं होगा तो वहां असत्य अपना अधिकार स्वमेव प्राप्त करता है जैसे कि जिस स्थान पर प्रकाश नहीं पहुंचता वहां अन्धकार स्वमेव होता है। जहां-जहां वेदों का प्रचार किन्हीं कारणों से बन्द हो गया, रूक गया या कम हो गया वहां अज्ञान व अधर्म बढ़ने लगा जिसका कारण वहां कालान्तर में सत्य व असत्य मिश्रित मत, मतान्तर, मजहब, सम्प्रदाय आदि उत्पन्न होते गये। जहां-जहां जितनी वर्षा होती है वह भूभाग वनस्पतियों व कृषि के उत्पादों से हरे-भरे रहते हैं और जहां वर्षा कम या बिलकुल नहीं होती वहां हरियाली कम व रेगिस्तान जैसी स्थिति होती है। इसी प्रकार से धर्म व मत-मतान्तर की स्थिति है।**

विज्ञान एवं धर्म के विषय में भी विचार कर लेना समीचीन है। विज्ञान ने सत्य को अपनाया। वह सारी मानव जाति की उन्नति व सुख का कारण बना। धर्म में किन्हीं कारणों से भ्रान्तियां उत्पन्न होने पर मत-मतान्तर उत्पन्न हुए। इनकी मान्यतायें कुछ समान, कुछ असमान व किंचित परस्पर विरोधी भी रही। इससे संघर्ष हुए और लाखों करोड़ लोग मृत्यु का शिकार हुए। प्रत्येक विचारशील, बुद्धिमान वा विवेकशील मनुष्य जानता है कि संसार के सभी लोगों का धर्म तो एक ही है यथा सत्य बोलना, माता-पिता, आचार्य व वृद्धों का आदर-सत्कार करना, तर्क से सिद्ध सच्चे ईश्वर की उपासना करना, सत्य का ग्रहण व असत्य का परित्याग, सत्य को मानना व मनवाना, असत्य को छोड़ना व छुड़वाना, अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करना, ज्ञान व विज्ञान को जीवन में स्थान देना व किसी का अपकार न करना एवं परोपकार व सेवाभावी जीवन व्यतीत करना, केवल अपनी उन्नति के प्रति ही सजग न होना

(पृष्ठ ३ का शेष)

बहुत से हठी दुराग्रही मनुष्य होते है कि जो वक्ता के अभिप्राय से विरूद्ध कल्पना किया करते है। विशेषकर मत वाले लोग क्योंकि मत के आग्रह से उनकी बुद्धि अन्धकार में फंस के नष्ट हो जाती है। यद्यपि इस ग्रन्थ को देखकर अविद्वान लोग अन्यथा ही विचारेंगे तथापि बुद्धिमान लोग यथायोग्य इस का अभिप्राय समझेंगे। सर्वत्मा, सर्वान्तर्यामी, सच्चिदानन्द परमात्मा अपनी कृपा से इस आशय को विस्तृत और चिरस्थायी करे। स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में महर्षि ने मानव धर्म की जो हृदयग्राही परिभाषा और व्याख्या की है वह मैं यहां उद्धृत कर रहा हूँ, "मनुष्य वही जो मननशील होकर स्वात्मवत् दूसरों के सुखदुःख, हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे जहाँ तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारी के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारूण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही चले जावें परनतु इस मनुष्यरूप धर्म से कभी भी पृथक न होवे" यदि सर्वत्र मानव धर्म की यह परिभाषा आचरण में उतार ली जाए तो सम्प्रदाय और साम्प्रदायिकता आदि की कोई समस्या रहेगी ही नहीं और उपासना पद्धतियां और ईश्वर को मानने या न मानने के विचार भिन्न-भिन्न होने के बाद भी नास्तिक-आस्तिक सब साथ-साथ मिलकर रह सकते हैं।उन्नीसवीं सदी के महान् पुरूष तथा भारत के धार्मिक पुर्नजागरण के नक्षत्र दयानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व बहु आयामी था। वे जहाँ वेद व्याख्याता, धर्म संशोधक, समाजशास्त्री, राष्ट्र निर्माता तथा मानव जाति के महान् हितैषी थे वहाँ एक महान शिक्षा शास्त्री भी थे। मनुष्य अपने जीवन में सर्वागीण उन्नति करे

-लक्ष्मणदास आर्य

www.thearyasamaj.org

अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना, पक्षपात रहित न्यायाचरण आदि। ईश्वर की उपासना नाना प्रकार से की जा सकती है परन्तु उसमें भी बुद्धिमानों व श्रेष्ठ लोगों का अनुसरण करना। यहां यह बताना उचित होगा की *उपासना का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ "योग दर्शन" है। इसमें किसी मत का आग्रह नहीं है। यह सारी दुनिया के सभी मतों के लोगों के लिये बनाया गया था तथा आज भी है। इसे अपनाकर ही मत-मतान्तरों का यथार्थ धर्म में एकीकरण हो सकता है। अतः विज्ञान का अनुसरण कर वैज्ञानिकों की ही भांति सत्य का ग्रहण व असत्य का त्याग प्रत्येक मत व मतान्तर, मजहब व सम्प्रदाय को करना चाहिये।*

अब आर्य समाज को लेते हैं। आर्य समाज क्या है। आर्य समाज वस्तुतः सत्य को जानने, मानने, स्वीकार करने व स्वीकार कराने वाला एक धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक क्षेत्रों में समग्र क्रान्ति करने वाला अग्रणीय आन्दोलनकारी संगठन है। जिस प्रकार वैद्य, चिकित्सक व डाक्टर रोगी के शरीर से अनावश्यक पदार्थो व रोग के किटाणुओं को नष्ट कर रोगी को स्वस्थ करते हैं इसी प्रकार आर्य समाज भी धार्मिक व सामाजिक जगत से अज्ञानता, कुरीति व मिथ्या विश्वासों आदि को दूर कर मानव जीवन को स्वस्थ करता है। इसकी उपमा का कोई अन्य संगठन देश या संसार में उत्पन्न नहीं हुआ न आज विद्यमान है। **यह आर्य समाज अपनी उपमा स्वयं ही है।** आर्य समाज ने सभी मत-मतान्तरों, मजहब व सम्प्रदाय आदि का मन्थन कर यह पाया कि संसार में केवल व केवल-मात्र वेद ही ईश्वरीय ज्ञान हैं जो शत-प्रतिशत सत्य व प्रमाणिक है। वेदों में जो कर्तव्य व अकर्तत्य बताये गये हैं, वही वस्तुतः धर्म व अधर्म वा पाप व पुण्य हैं। दुनिया के सभी लोगों को वेदों का अध्ययन कर उसके सत्य अर्थो को जानने का प्रयत्न करना चाहिये और उसी का आचरण करना चाहिये। **धर्म के पालन में वेद परम प्रमाण हैं। जो भी वेदों के विरूद्ध आचरण है वह पाप व अधर्म है। आर्य समाज वेदों के आधार पर निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान व सच्चिदानन्द स्वरूप वाले ईश्वर की योग पद्धति से उपासना, देवयज्ञ-अग्निहोत्र का अनुष्ठान, माता-पिता-आचार्य-विद्वानों-वृद्धों की सेवा व सम्मान, पशु-पक्षियों आदि के प्रति दयाभाव व उन्हें भोजन प्रदान करना, 16 वैदिक संस्कारों में पूर्ण आस्था व उसका अनुष्ठान, देश भक्ति आदि का आचरण करना सत्य धर्म व मानव धर्म को मानता है एवं उसके सर्वत्र पालन के लिए कार्यरत एक आन्दोलन है। आर्य समाज की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह आलोचनाओं से डरता नहीं, अपितु उसका स्वागत करता है और अन्य मत-मतान्तरों की शंकाओं एवं भ्रान्तियों के समाधान के लिए तत्पर रहता है। आर्य समाज विज्ञान को महत्व देता है और धर्म में उसके प्रयोग व पालन को स्वीकार करता है। आर्य समाज किसी व्यक्ति विशेष को धर्म प्रवर्तक या ईश्वर का दूत या सन्देशवाहक न मानकर वेदों एवं वैदिक मान्यताओं को धर्म मानता है और उसके पालन कराने के लिए प्रचार इसलिए करता है कि इसी में विश्व के सभी प्राणियों का कल्याण निहित है।** आर्य समाज से पहले सारे विश्व में मत-मतान्तरों में अव्यवस्था थी जिसे आर्य समाज ने वेद एवं सत्य का प्रचार कर कुछ नियंत्रित किया। ***यद्यपि रूढ़िवाद, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियां, असत्य व अज्ञान बढ़ रहा है फिर भी यह निश्चित है कि संसार का अन्तिम धर्म व मत सत्य व ज्ञान पर ही आधारित होगा और वह अन्य कोई नहीं अपितु वैदिक मत होगा। आर्य समाज को अपनाने में ही विश्व के सभी मानवों का हित निहित है और यदि वह ऐसा नहीं करते तो मृत्यु के बाद के अपने जीवन को वह संवार नहीं पायेगें जो कि एक वास्तविकता है।*** **"अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं"** के अनुसार सभी मनुष्यों को अपने शुभ व अशुभ कर्मो के फलों को अवश्य ही भोगना होगा। सुख-दुख रूपी कर्मो के फलों का भोग इस जन्म व भावी जन्मों में ईश्वर अवश्य प्रदान करेगा, यह सोच कर ही कर्मो में प्रवृत्त होना विवेकपूर्ण है। ***अतः वैदिक धर्म का पूरी निष्ठा से पालन करने वाले सभी मनुष्य परजन्म में अन्यों से अधिक लाभकारी व भाग्यशाली होगें।***

हमने इस लेख में संसार में धर्म, मत-मतान्तर-सम्प्रदाय-मजहबों और आर्य समाज का निष्पक्ष वर्णन किया है। आशा है कि पाठक इसके पढ़कर लाभान्वित होगें।

आर्य समाज, नारायणपेट की ओर से दशहरा झंडा जुलूस आयोजित

नारायणपेट, 16 अक्तूबर-(मिलाप ब्यूरो) दशहरा पर्व के अवसर पर आर्य समाज, नारायणपेट में विशेष यज्ञ कार्यक्रम श्रीनिवास मोहनलाल लाहोटी के [illegible] में आयोजित किया गया। यज्ञ के पश्चात आर्य समाज मंदिर पर ओ३म ध्वज फहराया गया। तत्पश्चात पर्व के महत्व में सभा का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता नारायण राव सारदे ने की। अवसर पर अपने संबोधन में कृष्ण भगवान, वीरन्ना तथा प्रभाकर ने पर्व की विशेषताएं बतायीं। सभा के अध्यक्ष नारायणराव ने कहा कि दशहरा पर्व अन्याय पर न्याय की तथा अधर्म पर धर्म की विजय है। उन्होंने कहा कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या तथा द्वेष से मनुष्य अधर्मी बन जाता है। इन सभी दुर्गुणों को दूर कर सद्मार्ग पर चलकर विजय पाना ही दशहरा पर्व का संदेश है।

आर्य समाज मंदिर से दोपहर 3 बजे शहर के प्रमुख व्यापारी तथा समाजसेवी श्रीनिवास मोहन लाल लाहोटी ओ३म ध्वज हाथों में लेकर जुलूस आरंभ किया। यह जुलूस नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए आगे बढ़ा। इन मार्गों पर जगह-जगह शॉल तथा पुष्प मालाओं से लाहोटी का अभिनंदन किया गया। यह जुलूस [illegible] बावली के पास सार्वजनिक सभा में परिवर्तित हो गया।

इस जुलूस में चेम्बर ऑफ कॉमर्स नारायणपेट, बुलियन मर्चेंट असोसिएशन के अध्यक्ष हरिनारायण भट्टड, भाजपा के तेलंगाना के नेता तथा तेलंगाना जेएसी के उपाध्यक्ष नागुराव नामाजी एवं आर्य समाज के प्रधान दत्तात्रेय कल्याणी, मंत्री वीरन्ना कुलगिरी, एम. कृष्ण भगवान कोषाध्यक्ष, क्लॉथ मर्चेंट असोसिएशन के अध्यक्ष दिलीप कुमार वैकुण्ठ, मास्टर वीवर्स असोसिएशन के अध्यक्ष विश्वनाथ कल्याणी, लॉयन्स क्लब ऑफ नारायणपेट टाउन के अध्यक्ष के. सुदर्शन रेड्डी, माहेश्वरी समाज के जुगलकिशोर, बंसीलाल गंदे चन्द्रकान्त, मारवाड़ी युवा मंच से वेणु लाहोटी सहित नगर के प्रमुख लोगों ने भाग लिया।

www.thearyasamaj.org

विजयदशमी पर्व पर
भव्य शोभा यात्रा के चित्र

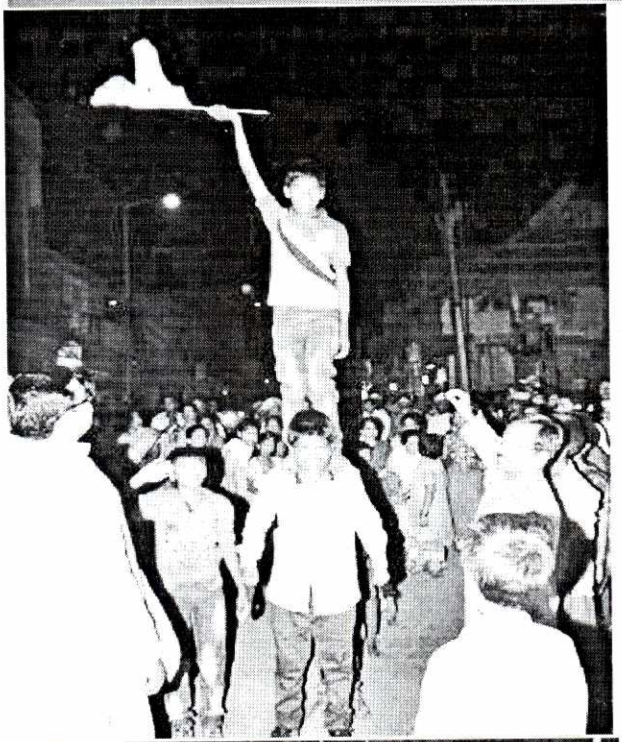

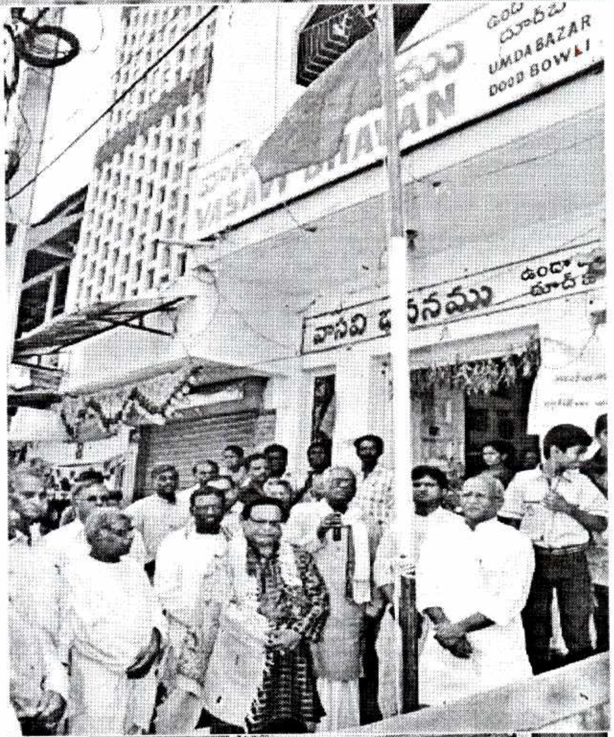

www.thearyasamaj.org

RNI.No.52990/93 Reg. No. HD / 783 / 2012-14 27-10-2013 आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్రప్రదేశ్, 4 - 2 - 15
మహర్షి దయానంద మార్గము
సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్ - 500 095
ఫోన్ : 040 - 24753827, 66758707, టెలి:24557946

సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

आर्य समाज द्वारा

विजयदशमी पर्व पर भव्य शोभायात्रा आयोजित

आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश के अंतर्गत कार्यरत नगरद्धय के सभी आर्य समाजों में सोमवार १४ अक्तूबर को विजयदशमी पर्व धूमधाम से मनाया गया. प्रातः समाजों में यज्ञ, ध्वजारोहण, प्रवचन, भाषण आदि कार्यक्रम हुए.

सायंकाल आर्य समाज किशनगंज से आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ मंत्री उम्दाबाज़ार आर्य समाज के प्रधान रामचंद्र कुमार के नेतृत्व में भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें ओ३म् ध्वजाओं से सुसज्ञित वाहनों के माध्यम से पधारे सैंकडों की संख्या में आर्य समाजी बन्धुएवं अन्य धर्मानुरागियों ने भाग लिया। 'वैदिक धर्म की जय' 'महर्षि दयनंद की जय' एवं 'आर्य समाज अमर रहे' के नारों से वातावरण को गुंजायमान किया। मधुर प्रभु भक्ति और देश भक्ति के सामूहिक गीतों का गायन करते हुए आर्य समाजों की टोलियाँ आगे बढ़ रही थी. शोभायात्रा का अफजलगंज, अशोक बाज़ार, गौलीगुड़ा गुरु द्वारा तथा सुल्तान बाज़ार आर्य समाज के पास निर्मित वेदियों से पुष्पवर्षा करके स्वागत किया गया। रतारूढ़ होकर जुलूस का नेतृत्व कर रहे रामचंद्र कुमार का भी पुष्पमालाओं द्वारा स्वागत और अभिनंदन किया गया। आर्य समाज, व्यासनगर से पधारे विद्यार्थियों के जुलूस आकर्षणीय रहे। डांडिया, लाठी चालन, देशभक्तों, क्रांतिवीरों की झाँकियों को बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रदर्शित कियागया था. रामचंद्र राजू, कार्पोरेटर, सुल्तान बाज़ार नेसुल्तान बाज़ार आर्य समाज की ओर से जुलूस का स्वागत किया गया।

जुलूस का समापन आर्य समाज, सुल्तान बाज़ार के पास हुआ। यहाँ आयोजित आम सभा को रामचंद्र कुमार ने संबोधित करते हुए उन्हें शोभायात्रा का नेतृत्व प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया और भावी जीवन में आर्य समाज की सेवा पूरी क्षमता और शक्ति से करने का वचन दिया। विठ्ठलराव आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र प्रदेश ने अपने ओजस्वी भाषण में हमारे देश की महान संस्कृति और सभ्यता का ऐतिहासिक विवरण दिया और वर्तमान में देश की परिस्थितियों की समीक्षा की। विशेषकर देश के राजनैतिक क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार, घोटालों और दोषी नेताओं के बचाव के लिए किये जा रहे हथखण्डों की कड़ी निंदा एवं आलोचना की। उन्होंने समस्त आर्यों को देश की इस दुर्दशा को सुधारने के लिए एकजुट होकर संघर्ष करने का अहवान किया। जयघोष और शांतिपाठ के साथ समस्त कार्यक्रम समाप्त हुआ। परस्पर पर्व की शुभकामनाएँ दी गई।

जुलूस के प्रारंभ में आर्य समाज किशनगंज में आयोजित अभिनंदन समारोह में रामचंद्रकुमार का किशनगंज और नगरद्धय के सभी आर्य समाजों की ओर से पुष्पमाला और शॉल भेंट कर स्वागत किया गया। पंडित प्रियदत्त शास्त्री एवं पंडित हरिकिशन वेदालंकार, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा ने रामचंद्र की सेवाओं का उल्लेख करते हुए अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का संचालन उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा लक्ष्मणसिंहजी ने किया। हरिकिशन वेदालंकार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। जुलूस समिति के संयोजक अर्जुन कुमार जायसवाल और उनके सहयोगी सदस्यों के सहयोग से जुलूस सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

अशोक कुमार श्रीवास्तव द्वारा लिखित रामचंद्र कुमार की परिचय पुस्तिका और रामचंद्र द्वारा लिखित 'वैदिक धर्म और आर्यसमाज' तेलुगु पुस्तिका का सभा प्रधान विठ्ठलराव आर्य ने लोकार्पण किया।

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUEMAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

कलांजली प्रेस विठ्ठलवाडी में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया। प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं. प्र. सु. बाज़ार, हैदराबाद